तानसेन समारोह

विश्व संगीत समागम

2020

26 से 30 दिसम्बर, 2020
तानसेन समाधि परिसर, हजीरा, ग्वालियर

26 दिसम्बर
प्रातः 10 बजे
पारम्परिक कार्यक्रम
हरिकथा एवं मीलाद

26 दिसम्बर, 2020
शुभारम्भ
प्रथम सभा (अपराह्न 4 बजे)
माधव संगीत महाविद्यालय-ध्रुपद गायन
देवकी पण्डित-गायन
संजय कुमार मलिक-ध्रुपद गायन
अभिषेक लहरी-सरोद

प्रातः कालीन सभाएँ
10 बजे से

27 दिसम्बर, 2020 द्वितीय सभा
शंकर गन्धर्व संगीत महाविद्यालय-ध्रुपद गायन
अभय रुस्तुम सोपोरी-संतूर
मोहम्मद अमान खाँ-गायन
अब्दुल मजीद खाँ एवं अब्दुल हमीद खाँ-सारंगी जुगलबंदी
देवानन्द यादव-ध्रुपद गायन
28 दिसम्बर, 2020 चतुर्थ सभा
तानसेन संगीत महाविद्यालय-ध्रुपद गायन
कमल कामले-वायोलिन
श्रीकांत कुलकर्णी -बाँसुरी
संजीव अभ्यंकर-गायन
पण्डित रामजी लाल शर्मा-पखावज
29 दिसम्बर, 2020 षष्ठम सभा
साधना संगीत महाविद्यालय-ध्रुपद गायन
मधु भट्ट तैलंग-ध्रुपद गायन
यश देवले-गायन
सुगातो भादुड़ी-मैन्डोलिन
कावालम श्रीकुमार-गायन

अपराह्न सभाएँ
4 बजे से

27 दिसम्बर, 2020 तृतीय सभा
भारतीय संगीत महाविद्यालय-ध्रुपद गायन
डेनियल रवि रैंजेल, मैक्सिको-विश्व संगीत
विवेक कर्महे-गायन
पुष्पराज कोष्टी एवं भूषण कोष्टी-सुरबहार जुगलबंदी
धनंजय जोशी-गायन
28 दिसम्बर, 2020 पाँचम सभा
ध्रुपद केन्द्र-ध्रुपद गायन
दारुश अलंजारी, हमता बागी,
मैशम्म अलीनागियान, ईरान-विश्व संगीत
प्रशांत एवं निशांत मलिक-ध्रुपद गायन
सुनील पावगी-गिटार
गणेश मोहन एवं रूपक कुलकर्णी-सितार एवं बाँसुरी जुगलबंदी
29 दिसम्बर, 2020 सप्तम सभा
राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय-ध्रुपद गायन
स्टीफन कायु, यू.के.-विश्व संगीत
साधना देशमुख मोहिते-गायन
प्रो. पण्डित साहित्य कुमार नाहर -सितार
पण्डित राजन-साजन मिश्र-गायन

30 दिसम्बर, 2020 अष्टम सभा-बेहट

(प्रातः 10 बजे)

तानसेन संगीत कला केन्द्र-ध्रुपद गायन

सारदा नाद मंदिर-ध्रुपद गायन

जगत नारायण शर्मा-पखावज

हेमांग कोल्हटकर-गायन

सोमबाला सातले कुमार-ध्रुपद गायन

संगतकार

तबला-रामेन्द्र सिंह सोलंकी, अकरम खाँ, मुज़फ़्फ़र रहमान, श्रुतिशील उद्धव, अब्दुल हनीफ खाँ, अंशुल प्रताप सिंह, मनोज पाटीदार,सलीम अल्लाहवाले, हितेन्द्र दीक्षित, संजय राठौर, शाहरूख़ खाँ, विनय विन्दे, अभिषेक मिश्रा

पखावज-रविशंकर द्विवेदी, अंकित पारिख, संजय आगले, पृथ्वीराज कुमार, जयवंत गायकवाड़

हारमोनियम-विवेक बन्सोड़, ज़मीर हुसैन, जितेन्द्र शर्मा, अभिषेक शिन्कर, अब्दुल सलीम खाँ, महेशदत्त पाण्डे, विवेक जैन, सुमित मिश्रा, नवनीत कौशल

सारंगी-आबिद हुसैन, फ़ारूख़ लतीफ़ खाँ, मोहम्मद अहमद, शफ़ीक़ हुसैन

वायोलिन-के. बालासुब्रह्मनियन

मृदगम्-के.बी. गणेश

घटम-वरूण राजशेखरन

प्रणति

छायाचित्र प्रदर्शनी

2020 में अब तक हमसे बिछड़ी कला एवं साहित्य की विभूतियों को भावांजलि

26 से 29 दिसम्बर 2020

संगीत सभाओं के समय में

तानसेन समारोह स्थल

वादी-संवादी

डॉ. अश्विन महेश दलवी-जयपुर

सुरबहार- सोदाहरण व्याख्यान

28 दिसम्बर 2020

अपराह्न 1.30 बजे

राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय ग्वालियर

तानसेन समारोह

विश्व संगीत समागम

विश्व संगीत समागम के रूप में वैश्विक पहचान स्थापित कर चुके तानसेन समारोह का यह 96वाँ आयोजन है। संगीत सम्राट तानसेन के प्रति आदरांजलि व्यक्त करने का सुखद भाव हमें साल-दर-साल गौरव की अनुभूति कराता है। हिन्दुस्तानी संगीत की साधना में मूर्धन्य और युवा कलाकारों की सक्रियता निःसंदेह प्रशंसनीय है। मध्यप्रदेश शासन कोविड की वर्तमान परिस्थितियों के बावजूद संगीत के इस लब्धप्रतिष्ठ आयोजन की परम्परा का निर्वहन कर रहा है। इस वर्ष के समारोह अवसर पर विशेष रूप से 2020 में अब तक हमसे बिछड़ी कला एवं साहित्य की विभूतियों को भावांजलि स्वरूप छायाचित्र प्रदर्शनी `प्रणति' संयोजित की गई है।

समारोह में शिरकत कर रहे सभी संगीतज्ञों एवं कला रसिकों के लिए यह आयोजन अनूठा और महत्वपूर्ण होगा, ऐसा विश्वास है।

उषा ठाकुर
मंत्री
संस्कृति, पर्यटन एवं अध्यात्म विभाग
मध्यप्रदेश शासन

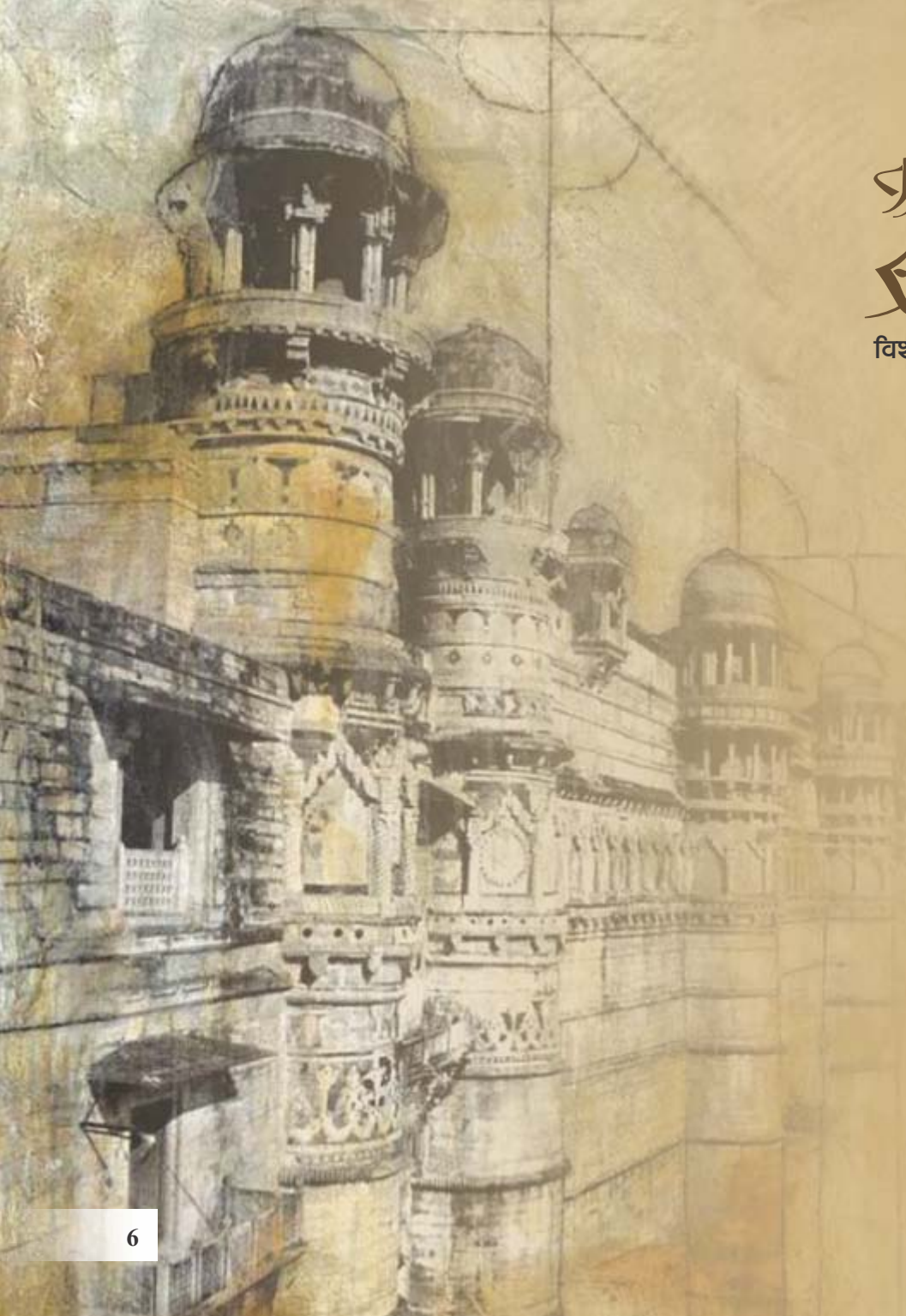

तानसेन समारोह

विश्व संगीत समागम

मध्यप्रदेश शासन संस्कृति विभाग की संगीत की विरासत को सहेजने और प्रचार-प्रसार करने की महत्वपूर्ण प्रतिबद्धता तानसेन समारोह के रूप में प्रतिवर्ष रेखांकित होती हैं। संगीत का यह आयोजन सोपान-दर-सोपान बढ़ता हुआ विश्व संगीत समागम के रूप में जाना जाने लगा है जो हिन्दुस्तानी संगीत की उत्तरोत्तर वृद्धि का परिचायक है। संगीत जगत की उत्कृष्ट प्रतिभाओं की प्रस्तुतियों से यह मंच अत्यधिक समृद्ध हुआ है। हमारा यह प्रयास होता है कि संगीत साधक अपनी साधना के माध्यम से संगीत सम्राट को विनयांजलि अर्पित कर सकें इसको दृष्टिगत रखते हुए गायन एवं वादन की संगीत सभाएँ आयोजन में सुनिश्चित की जाती रही हैं। कोविड के कारण इस वर्ष सायंकालीन सभाएँ नहीं हैं। प्रातःकालीन एवं अपराह्न में सभाएँ और वादी-संवादी सत्र पूर्व वर्षानुसार संयोजित हैं। एक अलग तरह की प्रदर्शनी `प्रणति' इस वर्ष संयोजित की गई है जिसमें 2020 में अब तक हमसे बिछड़ी कला एवं साहित्य की विभूतियों को भावांजलि अर्पित की जा रही है। विश्वास है आयोजन सभी को रुचिकर एवं लाभदायी होगा।

राहुल रस्तोगी
निदेशक

ब्रह्माण्ड की लय से जुड़े हैं ज्योतिष और संगीत

ब्रजेन्द्र शरण श्रीवास्तव

संगीत के स्वरों में अनोखी चित्ताकर्षक लय होती है जो मन को मुग्ध कर देती है। कृष्ण की वंशी की 'क्लीं' कामबीज से गुम्फित ध्वनि गोपियों को बरबस आकर्षित करती थी। आज के युग में संगीत रसिक श्रोता अपने पसन्द के कलाकार को सुनने के लिए सारी रात बैठे रहते हैं; रात के अन्तिम चौथे प्रहर में तीन से चार बजे के बीच, जब पण्डित जसराज जैसे कलाकार गाते हैं, 'बैरिन भोर भई' तब जाकर समय का बोध होता है। इसलिए लोककला शैली में बने रागमाला के चित्रांकनों में दर्शित नायिका के गायन-वादन से मुग्ध मृगशावक वस्तुत: एक वास्तविकता ही है।

ज्योर्तिविज्ञान और संगीतशास्त्र में सम्बन्ध का आधार : ज्योतिर्विज्ञान के ग्रहों में स्वर तो नहीं होते अतएव इनका स्वर प्रधान संगीत शास्त्र से क्या सम्बन्ध हो सकता है ? तथ्य यह है कि संगीत और ज्योतिर्विज्ञान के बीच सम्बन्ध बहुत गहरा है और यह दो तीन तरह का है। ज्योतिर्विज्ञान काल गणना का विज्ञान है जबकि संगीत में ताल और लय दोनों ही विविध समय सीमाओं में निबद्ध होने पर ही अपना स्वरूप और सौन्दर्य निखार पाते हैं। समय की गणना करने वाली ताल से हटते ही संगीत में लय भंग होने के साथ रस भंग भी हो जाता है। संगीत में राग की चंचल गम्भीर शान्त, वेदना संकुल श्रृंगार प्रेरक प्रकृतियों का तथा गायन-वादन के समय का, इन दोनों का ग्रहों की विविध मानसिक प्रवृत्तियों और ऋतु व दिन के कालखण्ड से सीधा सम्बन्ध जुड़ता है। इसके अतिरिक्त सबसे बड़ा पर कम ज्ञात तथ्य यह है कि पाश्चात्य संगीत के स्केल (सरगम) को बनाने में ग्रहों की परस्पर दूरियों के अनुपात ने अतीत में निर्णायक भूमिका भी निभाई है। इन सब कारणों से ज्योतिर्विज्ञान और संगीत में घनिष्ठ सम्बन्ध, पाश्चात्य संगीत और ज्योतिर्विज्ञान : पायथागोरस ने पृथ्वी को केन्द्र मानकर पृथ्वी से ग्रहों के बीच की दूरी के आधार पर संगीत के स्केल की अवधारणा रखी थी।

पायथोगोरस का Musical harmony of the Spheres 'ग्रहमण्डलों का संगीतात्मक तालमेल पायथागोरस ने ही सबसे पहले यह विचार रखा कि ग्रहमण्डलों की परस्पर दूरी में जो गणितीय अनुपात है उसमें विश्व का रहस्य छिपा है। पायथागोरस की मान्यता है कि विश्व

की अवधारणा तीन स्थिर नोट्स से कल्पित की गई है जिनका अनुपात 1:2, 2:3 तथा 3:4 है। ओक्टाव के तीन अन्तराल प्रथम, चतुर्थ एवं पंचम तो नियत या प्राथमिक माने गए हैं जिनसे कोई भी स्केल बन सकता है। अन्य नोट्स गतिशील हैं।

पायथागोरस का ग्रहमण्डलों का संगीत इस प्रकार कानों से सुना जाने वाला संगीत नहीं है बल्कि यह ग्रहों के बीच परस्पर तारतम्य या दार्शनिक गणितीय तादात्म्य है जो संगीतात्मक सौन्दर्य से सम्पन्न है। उन्होंने प्रतिपादित किया कि संगीत का स्केल (सप्तक) अनुमानित नहीं है बल्कि इसके पीछे ग्रह आधारित गणित व तर्क है। पायथागोरस ने इस प्रकार पाश्चात्य संगीत के स्केल के विकास में महत्वपूर्ण योगदान भी दिया है।

केपलर का Music of Spheres ग्रहों का संगीत सिद्धान्त : केपलर ने वर्षों तक अथक परिश्रम से आकाश में ग्रहों का वीक्षण करके ग्रहों की गति के तीन नियम बनाए। केपलर ने लिखा है कि प्रत्येक ग्रह का वेग तत्समय प्रचलित संगीत सप्तक के किसी न किसी स्वर से मिलता है। do-re-mi-fa-so-la-ti-do इस क्रम में पृथ्वी के टोन (स्वर) fa mi हैं, पृथ्वी लगातार ये ही स्वर निःसृत कर रही है जो लैटिन भाषा में famine अर्थात स्त्री होता है जो पृथ्वी का स्वभाव ही है, उजागर होता है।

भारतीय संगीत और ज्योतिर्विज्ञान : भारतीय संगीत का विकास गंधर्व वेद से हुआ है जो वेद का एक उपवेद है जबकि ज्योतिष वेद के छह अंगों में से एक अंग है अतएव दोनों का मूल एक ही होने से इन दोनों में सह सम्बन्ध तो प्रारम्भ से ही है।

ऋतु राग : भारतीय संगीत में प्रत्येक राग के गाने बजाने के लिए ऋतु निर्धारित की गई है। इसके अतिरिक्त 24 घण्टे के दिन रात को तीन-तीन घण्टे के कुल आठ प्रहरों में बाँटकर राग-रागिनी के गायन-वादन का प्रहर भी निश्चित किया गया है। समय के विभिन्न विभाजन ज्योतिर्विज्ञान की गणित शाखा के कार्य हैं इसलिए संगीत और ज्योतिर्विज्ञान के बीच यह पहले प्रकार का सम्बन्ध है। राग के समय निर्धारित करने के पीछे कारण यह है कि मनुष्य के शरीर स्थित वात पित्त कफ ये त्रिदोष सन्तुलित रहने पर शरीर व मन को स्वस्थ क्रियाशील एवं उत्साहित रखते हैं। इनके बीच असन्तुलन होने पर वात चित्त की अस्थिरता, पित्त अधीरता रोष तथा कफ जड़ता निराशा की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने लगते हैं। सूर्य की ऋतु अनुसार तथा दिन में विभिन्न प्रहरों में त्रिदोष की सक्रियता में अन्तर का सीधा प्रभाव त्रिदोषों के माध्यम से स्वास्थ्य एवं मनःस्थिति पर पड़ता है यह सर्वमान्य तथ्य है। इसलिए मनःस्थिति को अधिक सन्तुलित सुखकर बनाने की दृष्टि से अलग-अलग समय में अलग-अलग प्रकार के स्वर संयोजनों से युक्त रागों का गाना-बजाना युक्ति संगत समझा गया है।

परन्तु स्वयं संगीतकारों ने त्रिदोष आधार पर राग संयोजन का कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं किया है। ऋतु राग अपनी ऋतु में दिन रात में कभी भी गाए-बजाए जा सकते हैं, इनमें समय की छूट रहती है।

समय व राग: ज्योतिर्विज्ञान कालगणना में दिन की अवधि को चार समान भागों में तथा रात की अवधि को भी चार समान भागों में बांटा गया है। प्रत्येक भाग तीन-तीन घण्टे का होता है तथा `प्रहर' कहा जाता है। दिन में चार प्रहर और रात में चार प्रहर होते हैं। प्रहर की गणना सूर्योदय से की जाती है। ज्योतिर्विज्ञान में व्यावहारिक काल गणना का आधार सूर्योदय ही है। श्रीमद्भागवत के अनुसार दिन में चार प्रहर होते है जिन्हें याम भी कहते है और चार ही रात्रि में होते है। इसी प्रकार दिन में पंद्रह और रात में पंद्रह मुहूर्त होते है। इन सबकी गणना सूर्योदय से ही होगी। तात्पर्य यह कि प्रथम प्रहराम्भ सूर्योदय से ही मान्य है। अन्य समयमान जैसे अरुणोदय, उषा काल, ब्रह्म मुहूर्त आदि की गणना भी सूर्योदय से पूर्व की घटी मे बताई जाती है। प्रहर का औसत मान तीन घण्टे है पर सर्दी-गर्मी की ऋतु अनुसार दिन व रात का मान बढ़ता-घटता रहा है। सर्दियों में दिन स्थान भेद से औसत 10:30 घंटे का तथा रात 13:30 घंटे की होती है जबकि गर्मियों में इसके विपरीत दिन बड़ा होता है इसलिए दिन या रात की एक चौथाई अवधि के एक प्रहर की अवधि समान न रहकर लगभग पच्चीस मिनिट तक कम या अधिक हो सकती है।

संगीत में इन आठों प्रहरों में से प्रत्येक प्रहर में किस स्वर की प्रधानता का राग गाना-बजाना चाहिए यह निर्धारित किया गया है पर इसमें मतभेद हैं। इसके अतिरिक्त यह भी देखा जाता है कि संगीत के क्षेत्र में प्रथम प्रहर का आरम्भ सूर्योदय से करने के स्थान पर औसत समय प्रातः छह बजे से ही आरम्भ माना जाता है जो व्यवहार की दृष्टि से कुछ ठीक है, परन्तु प्रातः सात बजे से प्रहर आरम्भ करना नितांत अशुद्ध है। संगीत के कुछ संगीतकारों के अनुसार सूर्योदय से पूर्व चार बजे से प्रथम प्रहर माना गया है परन्तु यह ज्योतिष गणना के अनुसार रात्रि का अन्तिम प्रहर होता है ज्योतिष व धर्मशास्त्र में ब्रह्म मुहूर्त भी रात्रि के अन्तिम प्रहर में होता है प्रथम प्रहर में नहीं होता।

राग के स्वरों के अनुसार समय के विभिन्न विभाजन : सप्तक के सा रे ग म चार स्वर पूर्वांग तथा प ध नि स उत्तरांग स्वर कहे जाते हैं। रागों के समय को लेकर विभिन्न घरानों में कुछ मतान्तर हैं। कर्नाटक संगीत में राग की समय सीमा पर जोर नहीं है तथा पाश्चात्य संगीत में भी इस प्रकार का समय विभाजन नहीं है।

पाश्चात्य संगीत में कई कॉर्डस या स्वर एक साथ बजाए जाते हैं। जैसे- स ग प इसलिए यह हारमनी प्रधान संगीत है इसमें समयानुसार संयोजन सम्भव ही नहीं है जबकि भारतीय संगीत राग या मेलोडी प्रधान है जिसमें राग के सभी स्वर आरम्भिक षड्ज (सा) से सम्बन्ध बनाकर स्वरों का आरोह अवरोह आदि कला कार्य करते हैं।

ताल : स्वरों की निरन्तरता में भी एक स्वर से दूसरे स्वर के बीच कुछ अति सूक्ष्म समय अन्तराल होता है। इस अन्तराल को मापने का कार्य ताल से लिया जाता है। ताली बजाकर और बिना बजाए हाथ खाली चलाने से इन दो क्रियाओं से ताल की गिनती की जाती है। यह गिनती मात्रा के अनुसार होती है और मात्रा की समयावधि ज्योतिर्विज्ञान के काल खण्डों के अनुसार की जाती है। भरत मुनि ने एक मात्रा की कालावधि पाँच निमेष के समकक्ष मानी है। इसका अर्थ है कि पाँच निमेष में जो शब्द बोला जाए उसकी समयावधि एक मात्रा होगी। संगीत बोध ग्रंथ में पाँच निमेष को दो मिनिट के बराबर बताया है जो ज्योतिर्विज्ञान गणित की दृष्टि से अशुद्ध है तथा व्यवहार में भी दो मिनिट तक का समय एक मात्रा का असम्भव है। परन्तु वर्तमान संगीत में मात्रा का कालमान स्थिर नहीं रहा है। जैसे मध्य लय में यदि मात्रा का कालमान दो सैकेण्ड का है तो द्रुत लय में यह चार सैकेण्ड का और विलम्बित लय में मात्रा का कालमान पाँच सैकेण्ड तक हो सकता है। आजकल मात्रा का काल मान कलाकार अपने ढंग से तय करते हैं।

ग्रह और राग : ग्रह की प्रकृति से राग की प्रकृति का सीधा सम्बन्ध है। ग्रह का दैनिक समय चक्र पर भी प्रभाव रहता है। जैसे- शनि मंगल चन्द्र को मध्य रात्रि में पूर्ण बल प्राप्त है जबकि सूर्य गुरू शुक्र दोपहर में पूर्ण बली आधीरात में शून्य बली तथा सुबह शाम आधा बली होते हैं। बुध सदैव बली है।

संगीत रसनिष्पत्ति में सहायक होता है इसलिए अलग-अलग रस या भाव के उद्रेक के लिए भी अलग-अलग समय निर्धारित है। ग्रह व संगीत के भाव में भी सम्बन्ध है। शनि ग्रह गम्भीरता वैराग्य विषाद करुणा का ग्रह है इसलिए जो राग करुणा आदि भाव सृजित करते हैं उन पर शनि का प्रभाव होता है इसे यूँ भी कह सकते हैं कि जिस गायक की जन्म पत्रिका में शनि का प्रभाव प्रधान होता है वह गम्भीर राग प्रस्तुत करने में निपुण होते हैं। बृहस्पति ग्रह उदात्त, विस्तार, शान्त, नवीनता का, शुक्र ग्रह श्रृंगार प्रेम का, इसी प्रकार मंगल ग्रह सक्रियता अधीरता का संकेतक है। बुध ग्रह चंचलता नयापन शीघ्रता विविधता का चन्द्रमा कल्पनाशील सृजन का भक्ति समर्पण का, सूर्य स्वयं केन्द्रित आत्म लीनता राजसिक प्रकृति का ग्रह है अतएव अपने भाव या प्रकृति के अनुसार गायक या वादक को इन भावों के सृजन में विशेष प्रतिभा देता है। श्रोता भी अपनी पत्रिका में ग्रह की प्रधानता अनुसार वैसे ही भाव प्रधान राग पसन्द करते हैं। बुध की प्रधानता वाला गायक या श्रोता छोटी बन्दिश मध्य या द्रुत लय जोड़ना पसन्द करेगा जबकि शनि प्रधानता वाला गायक श्रोता बड़ा खयाल विलम्बित लय में रम जाएगा। मंगल प्रधान ठुमरी अंग एवं ओजपूर्ण राग पसन्द करता है तथा वाद्य वृन्द प्रधान हारमोनिक संगीत भी। शुक्र ग्रह से प्रभावित को लोकगीत, श्रृंगार प्रधान राग वाद्य में कण या ईषत् स्पर्श स्वर गमक मुर्की इत्यादि से सज्जित रंजकता पसंद होती है।

ग्रह और कलाकार : किस ग्रह का प्रभाव गायक-वादक पर अधिक है यह उनकी गायनशैली एवं राग के साथ रंजकता, कलात्मक सृजन क्षमता एवं श्रोता को विमुग्ध कर रस के विस्मय जगत में ले जाने की क्षमता पर निर्भर होता है। इस दृष्टि से पण्डित जसराज के गायन पर एवं व्यक्तित्व पर उदात्त आध्यात्मिक अनुभूति कारक ग्रह बृहस्पति का प्रभाव अधिक है। पण्डित भीमसेन के गायन की गम्भीरता विशदता उनके गायन व व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दर्शाता है। बेगम परवीन सुल्ताना की साढ़े तीन सप्तक तक गायन का विस्तार करने की क्षमता और चंचलता बुध शुक्र की प्रधानता दर्शाता है। किशोरी अमोनकर का गायन रंजकता के साथ किंचित गम्भीरता एवं उदासीनता का प्रभाव लिए है। अतएव शुक्र शनि की प्रधानता का संकेतक है। पण्डित रविशंकर एवं पण्डित शिवकुमार शर्मा का वाद्यसंगीत बहुआयामी है जो बृहस्पति एवं बुध के संयुक्त प्रभाव का परिणाम है। उस्ताद अमजद अली का सरोद वादन रंजकता और द्रुत गति से रस संप्राप्ति कारक है अतएव शुक्र बुध प्रधान है। ये कुछ उदाहरण हैं जो ग्रहों और संगीत संरचना के बीच सम्बन्ध दर्शाते हैं। जो मेरे निजी अनुभव या अनुभूति आधारित हैं जिसे और अनुसंधान से परिष्कृत किए जाने की आवश्यकता है। गायक या वादक को कौन सी शैली या वाद्य अपनाना चाहिए तथा किस राग में व्यक्तित्व अधिक निखरेगा इसका अध्ययन ज्योतिर्विज्ञान एवं संगीत शास्त्र का साझा अन्वेषण क्षेत्र हो सकता है जिसके लिए डाटा बैंक बना कर कार्य करना होगा।

इसी प्रकार वाद्य संगीत में विभिन्न वाद्यों में निपुणता किस एक या अधिक ग्रह की प्रबलता से प्राप्त होती है इस पर भी अनुसंधान करने पर संगीत व ज्योतिर्विज्ञान के मध्य सम्बन्धों पर नया अध्याय लिखा जा सकता है। वाद्य संगीत में आघात से बजाए जाने वाले अवनद्ध वाद्य जैसे तबला, ड्रम आदि, फूँक से बजाए जाने वाले सुषिर वाद्य जैसे बाँसुरी, ट्रम्पेट, हैक्साफोन आदि, तार पर घर्षण से बजाए जाने वाले तत वाद्य जैसे-वीणा, सारंगी, सितार, सरोद आदि एवं घर्षण से बनाए जााने वाले घनवाद्य जैसे करताल और मंजीर आदि में निपुणता एवं रंजकता, स्वतंत्र एकल वादन, संगत में वादन या नृत्य या वृन्द में वादन इत्यादि क्षेत्रों में ज्योतिर्विज्ञान की दृष्टि से अनुसंधान की व्यापक संभावनाएँ हैं।

दोनों का लक्ष्य एक : और अब आखिर में विश्वविख्यात तबलावादक बनारस घराने के, पद्मभूषण पण्डित किशन महाराज का यह वक्तव्य : हर सच्चा कलाकार एक समय बाद सही अर्थों में संगीत को मोक्ष का मार्ग समझने लगता है क्योंकि इसमें स्वर भक्ति है और लय ज्ञान है।

गायक वादक के ग्रह की प्रबलता के अनुसार ही उसके गायन वादन की शैली एवं प्रकृति होती है जिसका कि उल्लेख अभी किया गया है। अतएव अपनी आन्तरिक मनोवृत्ति को पहचानने में ग्रह की सहायता मिल सकती है। मनोवृत्ति अनुसार गायन वादन में ही भाव का परम उन्मेष होता है; परम उन्मेष की, स्व को स्वर में विलीन होने की स्थिति ही तो मोक्ष का वह अमृतमय क्षण होता है जो अनिर्वचनीय होता है जिसमें साधक सदैव बने रहना चाहता है। ज्योतिर्विज्ञान भी धर्म, अर्थ और काम इन तीनों पुरुषार्थों में साधन सहायक बनने के पश्चात वेद के अंग होने के नाते अपने चरम उत्कर्ष में मोक्ष मार्ग का भी सहायक है। अतएव अपने लक्ष्य के प्रति दोनों में महत्वपूर्ण सहमति व समानता है। दोनों के मध्य अन्त: सम्बन्ध पर और प्रयोगाश्रित अन्वेषण से दोनों ही परस्पर लाभान्वित होंगे विशेषकर संगीत में साधकों को इससे बहुत सहायता मिलेगी।

संगीत शास्त्री कवि तानसेन

दिनेश पाठक

राजा मानसिंह तोमर द्वारा आविष्कृत ध्रुपद गायन शैली को स्थायित्व प्रदान करने के लिए यह आवश्यक था कि ध्रुपद शैली में ऐसे सरल,सहज और जीवन से जुड़े हुए पदों की रचना की जाए जो जनसाधारण के लिए आनंददायक हों। राजा मानसिंह तोमर के राजाश्रय में रहते हुए इस कार्य को तानसेन ने अत्यंत कुशलतापूर्वक पूर्ण करते हुए ध्रुपद शैली का प्रचार-प्रसार राजप्रासाद से लेकर जनसाधारण तक कर दिया। इन पदों में तानसेन का कवित्व साहित्यिक दृष्टि से भी उत्कृष्ट श्रेणी का था, किन्तु एक विलक्षण संगीतज्ञ के रूप में तानसेन की प्रसिद्धि इतनी विस्तृत थी कि उनके व्यक्तित्व के इस दूसरे आयाम के संबंध में कम ही चर्चा हो सकी।

तानसेन के कवित्व की विशिष्टता के संबंध में लिखा गया है कि 'प्राचीन और मध्ययुग के हिन्दू काव्य, ज्ञानयोग और भक्ति का मंथन करके जो नवनीत निकला वह तानसेन के पदों के स्वर्ण कटोरे में भर दिया गया है।' तज़ुक जहाँगीरी में जहाँगीर ने तानसेन को अपने पिता शहंशाह अकबर के दरबार का सर्वश्रेष्ठ संगीतज्ञ और उच्च कोटि का कवि भी होने बाबत् उल्लेख किया है।

एक उत्कृष्ट कवि के तौर पर तानसेन ने विभिन्न राग-रागनियों में असंख्य पदों की रचना की। ये पद प्रत्येक मौके, ऋतु, पर्व और रस के लिए उपयुक्त थे। उन्होंने भक्तों के लिए ईश्वर आराधना के ध्रुपद बनाएँ, ऋतुओं के अनुसार वर्षा, वसंत और पर्वों के लिए होली, दशहरा, ईद आदि के अवसर पर गाये जा सकने वाले पद रचे। उन्होंने राजा महाराजाओं के गुणों की प्रशंसा में भी पद कहे। इसके अलावा मुगल दरबार की विलासप्रियता को मद्देनजर रखते हुए उन्होंने श्रृंगारिक पदों की रचना भी की।

इंदु से बदन, नैन खंजन से, कंठ कोकिल बचन सुहाई नासा कीर,अधर विद्रुम, दाडी,दसन दमकाई।।
श्रीफल उरोज,ग्रीव कपोत,बेनी नाग सी झुकी सुखदाई।
कटि केहरि कंदली जंघ,पद सरोज पदना सी,
तानसेन ऐसी पै बलिक बलि जाई।।

तानसेन रचित कई भक्ति प्रधान ध्रुपद रचनायें विष्णुपद मंदिरों में प्रचलित हुईं और लोक भजन के रूप में सम्पूर्ण राष्ट्र में लोकप्रिय हो गईं। तानसेन की ध्रुपद रचनाओं का संकलन सर्वप्रथम 1898 में कृष्णानंद व्यास द्वारा अपने ग्रंथ 'रागकल्पद्रुम' में किया गया। बाद में भी कई

विद्वानों ने इस संबंध में शोध उपरांत तानसेन द्वारा रचित ईश आराधना, प्रताप वर्णन, प्राकृतिक सौंदर्य, ऋतु वर्णन,पर्वोत्सव, सौंदर्य, नायिका भेद, नीति और उपदेश, निराकार भक्ति और एक ईश्वरवाद जैसे विषयों पर आधारित पदों का उल्लेख किया है। मदनोत्सव के अवसर पर उनकी रचना कुछ इस तरह थी,

घर घर तैं ब्रज बनिता जो बन निकसी आज,
कंचन थार भरि भरि नग नोछावर करन लाल की।
सप्तसुर लै गावत, कंठ कोकिला लाजत,
उपज अति रसाल गमन तान ताल की।।
मदन महोत्सव साज समाज गोपी वृंद,
मली चलत चाल मराल की।
तानसेन प्रभु रस बस कर लीने, तिरछी चितवन मदन गुपाल की।।

तानसेन रचित ध्रुपदों में छत्तीस राग-रागिनियों का प्रयोग हुआ है। इनमें राग भैरव, रागिनी तोड़ी, रागिनी गुर्जरी एवं मुल्तानी धनाश्री प्रमुख हैं। पद रचना अधिकतर उनके द्वारा आविष्कारित अथवा प्रचलित राग रागिनी में ही की गई है। पदों में अधिकतर चौताल का प्रयोग किया गया है, क्योंकि यही ताल, ध्रुपद गायन में प्रयुक्त होता है। भक्ति काल के अन्य कवियों के समान कवि तानसेन ने भी अपने पदों में माधुर्यपूर्ण ब्रज भाषा का प्रयोग किया है लेकिन उनके द्वारा पदों में प्रयुक्त ब्रजभाषा पर मध्य देशीय शब्दावली का प्रभाव भी है। यह उनका ग्वालियर से अभिन्न नाता होने के कारण ही है। तानसेन की रचनाओं की भाषा में सरसता, तत्सम, तद्भव एवं देशज शब्दों का मिश्रण झलकता है। साथ ही उन्होंने संस्कृत अरबी फारसी आदि की प्रचलित शब्दावली का प्रयोग भी किया है। इस सब के प्रयोग के कारण उनके पदों की भाषा सरल एवं प्रभावकारी थी और आमजन द्वारा सहज समझी जा सकती थी। उन्होंने अपने पदों में लोकोक्तियों एवं मुहावरों का भी समुचित प्रयोग किया है।

ग्वालियर में तोमर वंश के पराभव के बाद तानसेन बांधवगढ़ के राजा रामचंद्र बघेला के दरबार में पहुँच गए थे। राजा रामचंद्र से भी उन्हें वैसा ही सम्मान प्राप्त हुआ था जैसा महाराजा मानसिंह तोमर ने अपनी रंगशाला के प्रतिष्ठित संगीत आचार्यों को दिया था। उस दौरान, तानसेन के द्वारा अपने आश्रयदाता की मंगल कामना से संबंधित पदों में अपने कार्य क्षेत्र में स्वयं को भी सर्वोच्च बताना उनके स्वाभिमान और आत्मसम्मान को प्रदर्शित करता है।

सब्द प्रथम ओंकार, वर्ण प्रथमअकार,
जाति प्रथम ब्राह्मण, प्रणाम कर लीजिये।
देव प्रथम नारायण, ज्ञानी प्रथम महादेव,
क्षमा प्रथम धरनी, तेज प्रथम भान, लिख लीजिये।।
नदी प्रथम गंगा, पर्वत प्रथम सुमेरू,
साज प्रथम बीन, भक्तन प्रथम नारद कहि दीजिये।।
गीत प्रथम संगीत, नर में प्रथम स्वयंभू
राजन प्रथम राजा राम।
तानन प्रथम तानसेन, उन्ननचास कूट रस पीजिये।।

उनके पदों में पंक्तियों की लम्बाई का कोई निश्चित आकार नहीं है, कहीं चारों पंक्तियाँ बराबर हैं, कहीं चारों छोटी बड़ी हैं, कहीं पहली पंक्ति छोटी है तो तीसरी चौथी बड़ी है, कहीं पहली, दूसरी छोटी है, तीसरी, चौथी बड़ी है। दरअसल तानसेन ने अपने पदों की रचना उन्हें शास्त्रोक्त विधि से राग रागनियों का प्रयोग कर स्वयं गाने के लिए की थी पढ़ने के लिए नहीं, इसीलिए तानसेन के लिए 'संगीत शास्त्री कवि' विशेषण का प्रयोग सही है। संगीत शास्त्री गायक का कवि होना सहज स्वाभाविक प्रतीत होता है, विशेष तौर पर उस भक्ति काल में जब

वाराणसी में संत तुलसीदास, ब्रज में कवि शिरोमणि सूरदास, ओरछा में महाकवि केशवदास और अकबर के दरबार में अब्दुल रहीम खान-खाना जैसे उद्भट विद्वान अपनी ओजस्वी रचनाओं से समाज और साहित्य को समृद्ध कर रहे थे। काव्य और संगीत का पारस्परिक संबंध अत्यंत घनिष्ठ है। संगीत में स्वर और ताल से काम लिया जाता है तो काव्य में शब्द और अर्थ से। संगीत सम्राट तानसेन ने अपने सभी पद स्वयं तथा दूसरों के गाने योग्य बनाए थे, इसलिए कई पदों में संगीत शास्त्र से संबंधित पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग भी खूब किया गया है। इन पदों को पढ़ने से प्रमाणित हो जाता है कि तानसेन का संगीत शास्त्र संबंधी ज्ञान अद्वितीय था।

तानसेन ने तीन ग्रंथों की रचना की, 'संगीतसार', 'रागमाला' तथा 'गणेशस्त्रोत'। संगीतसार में संगीत के समस्त अंगों का यथा नाद, राग, तान, स्वर, वाद्य और ताल का विवेचन किया गया है। रागमाला में राग रागिनिओं का वर्णन है और गणेश स्त्रोत प्रथम वंदनीय भगवान श्री गणेश की अभ्यर्थना है। यह अत्यंत अल्प ज्ञात तथ्य है कि गणेश वंदना हेतु सम्पूर्ण राष्ट्र में सदियों से गायी जाने वाली स्तुति के रचयिता भी संगीत सूर्य तानसेन ही थे और आज भी यह थोड़े बहुत बदलाव के साथ जनसाधारण द्वारा गणेश वंदना के लिए उपयोग की जाती है। संगीत सम्राट तानसेन द्वारा रचित मूल गणेश वंदना कुछ इस प्रकार थी :

उठि प्रभात सुमरिये,जय श्री गणेश देवा।
माता जाकी पारवती,पिता महादेवा।।
अंधन कौं नेत्र देत कुष्ठी कौं काया।
बंध्या कौं पुत्र देत निर्धन को माया।।
एकदंत दयावंत, चार भुजा धारी।
मस्तक सिंदूर सौहे मूषक असवारी।।
फूल चढ़े पान चढ़े, और चढ़े मेवा।
मोदक को भोग लगे,सुफल तेरी सेवा।।
रिद्धि देत सिद्धि देत,बुद्धि देत भारी।
तानसेन गजानंद सुमिरो नर नारी।।

डॉ. बीवी केसकर के अनुसार तानसेन एक महान स्वर रचनाकार थे। उन्होंने असंख्य ध्रुपदों की रचना की थी। तात्कालिक दृष्टि से ध्रुपद रचना श्रेष्ठ तथा उच्च अभिव्यक्ति की सर्वाधिक लोकप्रिय शैली थी। तानसेन की ख्याति इसलिए भी दूर-दूर तक फैली थी कि वह मुगल सम्राट के शाही दरबार के संगीतज्ञ थे। तानसेन स्वर रचनाकार तो थे ही, साहित्य के अव्यवसाई एवं उच्च कोटि के कवि भी थे। तानसेन की अधिकांश रचनाएं शास्त्रीय रागों में निबद्ध एवं गेय हैं। अतः उनकी रचनाओं में स्वर, ताल, नाद और लय के आधार पर राग का भाव और रूप लावण्य ही मुखरित हुआ है। स्वामी हरिदास से सीखते समय वृंदावन के वातावरण का जो प्रभाव तानसेन के मन मस्तिष्क पर पड़ा, उससे उनकी रचनाएँ श्रृंगार और भक्ति रस से भी परिपूर्ण हो गईं।

यह धारणा है कि अष्टछापी कवि गोविंद स्वामी ग्वालियर के पास स्थित ग्राम आंतरी के निवासी थे और विट्ठलनाथ गुसाईं से दीक्षा लेने ब्रज चले गए थे। गोविंद स्वामी ग्वालियर की ध्रुपद शैली की शास्त्रीयता के मर्मज्ञ भी थे। अकबर के दरबार में पहुँचने के बाद तानसेन, इन्हीं की शरण में पहुँचे थे। महाकवि सूरदास भी ग्वालियरी ध्रुपद शैली के गायक थे और इसी शैली की संगीत पद रचना की सिद्धहस्तता को लेकर वे ब्रज में वल्लभाचार्य की शरण में गए थे। यह भी कहा जाता है कि महाकवि सूरदास से तानसेन की भेंट और बाद में प्रगाढ़ मित्रता गोविंद स्वामी के यहां ही हुई थी। बाद में दोनों के मार्ग अलग हो गए। सूरदास को वल्लभाचार्य ने, ब्रज पहुँचने पर अष्टछाप में सम्मिलित कर उचित स्थान दिया और तानसेन बाँधवगढ़ होते हुए अकबर के दरबार में पहुँच गए। कुछ एक इतिहासविदों ने सूरदास के फतेहपुर सीकरी पहुँचने का प्रमाणिक उल्लेख भी किया है और वहाँ उनके द्वारा अकबर को पद सुनाने का विवरण भी दिया है। इतिहासकार विंसेंट स्मिथ ने भी तानसेन की ब्रज यात्रा के संदर्भ में उनकी मुलाकात सूरदास से होने का जिक्र किया है, पुष्टि स्वरूप दोनों मित्रों द्वारा एक दूसरे की प्रशंसा में कहे गए दोहे भी उपलब्ध हैं। तानसेन ने सूरदास के लिए कहा था,

किधों सूर को सर लग्यो, किधों सूर की पीर।
किधों सूर को पद लग्यो,तन मन धुनत सरीर।।

प्रशंसा के प्रतिउत्तर में सूरदास कहाँ चुप रहने वाले थे, उन्होंने भी अपने मित्र की अलौकिक संगीत निपुणता की प्रशंसा करते हुए यह दोहा कह दिया,

विधना यह जिय जानिकै,सेसहि दीये ना कान।
धरा मेंरू सब डोलते, तानसेन की तान।।

अर्थात् विधि ने यह जानकर ही शेष नाग को कान नहीं दिए कि तानसेन की तान यदि वो सुन लेते तो धरती और आकाश सभी कुछ डोलने लगता।

गोविंद स्वामी के गुरुत्व में महाकवि सूरदास और तानसेन ने अनेक पदों की रचना की, लेकिन तानसेन का गायिकी पक्ष इतना प्रबल था कि उसके समक्ष उनका कवि पक्ष उभर नहीं सका। तानसेन के अनेक पद उपलब्ध हैं एवं कुछ अभी भी शोध का विषय हैं। तानसेन की काव्य रचना हालांकि सीमित है, परंतु उसकी सम्पूर्णता की खोज अभी बाकी है।

कहते हैं महान् आत्माओं को अपने आसन्न अंतकाल का आभास हो जाता है। ऐसा ही तानसेन के साथ हुआ था। उस समय उनकी आयु लगभग 90 वर्ष की हो चुकी थी। इस आयु में स्वाभाविक मनस्थिति ऐसी हो जाती है कि संसार से मन विरक्त होने लगता है, ऐसी मनस्थिति में तानसेन ने कहा,

हे ईश्वर,मो हिय को जानत।गति को बीतती बिना देखे तुव दरस।
एक निमिष जुपेना हीनिन निरखत मैं।सांस अकुलात कछु न सुहात मन नैन दोऊ जात तरस।।
भव भंजन मन रंजन, काटत दुःख द्वंद।एसो जग में व्यापी रहियो सरस।
तू ही आदि तू ही अंत तारणतरन।तानसेन तू ही अरस परस।।

अपने अंत समय तक तानसेन की रचना शीलता कायम रही थी। रोग ग्रस्त होकर शैय्या पकड़ने के बाद भी तानसेन ने कुछ इस तरह अपनी स्थिति का वर्णन किया था,

तेरी गति औगति मोपे बरनी ना जात।
नारायन निरंजन निराकार।
परमेश्वर सप्तदीप शिवशंकर।
शिवशंकर अवतार कौ, लेवत हरत भरत वित।
देखत तेरी विडंबना सब ही, सकल स्त्री पुरुष नारी नर।।
तू ही जल थल, तू ही पसु पक्षी, तू ही पवन पानी,
तू ही धरती, अंबर तू ही चंद्र तू ही सुर्ज, बसो जो जलधर
तानसेन के प्राण उड़त हैं, जानत हैं सब घर घर।।

अदृश्य में हस्तक्षेप

अश्विनी कुमार दुबे

मानव शरीर उतना ही नहीं है, जितना दिखाई देता है। पतंजलि ने अपने योग दर्शन में तीन तरह के शरीरों का वर्णन किया है; स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर। अब तो वैज्ञानिक भी कहने लगे हैं कि हमारे दृश्य शरीर पर ही हमारी सत्ता समाप्त नहीं होती, इससे आगे भी शरीर है, जो अदृश्य है। इस अदृश्य शरीर पर जो घटता है, उसके लक्षण स्थूल शरीर पर दिखाई देते हैं। शास्त्रीय संगीत जैसी अमूर्त कला पहले इसी अदृश्य को प्रभावित करती है, फिर उसका प्रभाव आनंद, उत्साह, सुख, संतोष स्थूल शरीर में महसूस होता है। डॉक्टर यहाँ तक कहते हैं कि आदमी के मनोमय जगत की हलचल उसके स्थूल पर प्रकट होती है। कहा भी गया है कि `मन चंगा तो कठौती में गंगा'। शास्त्रीय संगीत इसी अदृश्य में सार्थक हस्तक्षेप है।

जीवन में हर्ष और विषाद दोनों हैं। संकट है, परेशानियाँ है, मुश्किलें हैं, संघर्ष हैं और तनाव भी, इनसे निजात पाना है तो हमें अपने अदृश्य पर काम करना होगा। ये सारी विसंगतियाँ अदृश्य में हुई हलचलों का परिणाम हैं इसलिए अदृश्य को संभालने से हमारा प्रकट संतुलित हो जाएगा। भारतीय शास्त्रीय संगीत की शुरुआत नाद से है। अर्थात `ऊँ' से, यह जीवन का बीज मंत्र है। सारे जगत में जो जीवंतता दिखाई दे रही है, इसके मूल में नाद है। पेड़, पौधे, पशु, पक्षी और मनुष्य जहाँ कहीं भी जीवन है, उसके मूल में नाद है और भारतीय शास्त्रीय संगीत नाद की साधना है इसीलिए ये जीवन जगत को प्रभावित करता है। पूरे जीवन का विस्तार शास्त्रीय संगीत से आप्लावित है। जिसे हम जड़ कहते हैं, उसमें भी सूक्ष्म जीवन प्रवाहित है, अतः हमारे संगीत की वहाँ भी पैठ है। तब तो हम कहते हैं कि राग से पत्थर तक पिघल जाते हैं।

जीवन की आपाधापी में हम ज्यादा स्थूल होते चले गए हैं। सूक्ष्म से हमारी दूरी बढ़ती चली गई है, वहाँ जाने-अनजाने ऐसी हलचलें हैं, जिनसे जीवन में दुःख हैं, बीमारियाँ हैं, अवसाद हैं। शास्त्रीय संगीत के हस्तक्षेप से हम अपने सूक्ष्म शरीर को संतुलित कर सकते हैं। इसके लिए आपको शास्त्रीय संगीत के व्याकरण को जानने की जरूरत नहीं है। सिर्फ आपको धैर्य से बैठना और शांतिपूर्वक सुनना भर है। धीरे-धीरे आप अपने ही अमूर्तन में प्रवेश करने लगते हैं। वहाँ आपके जीवन का मूल है नाद, जिसे हम अस्तित्व की जड़ कहते हैं, संगीत उस जड़ को रस तत्व से सिंचित करता है, जिसकी उपलब्धि है - स्वस्थ और सानन्द होना।

यह पूरा वर्ष कोविड-19 की त्रासदी का वर्ष रहा। यह त्रासदी अभी भी चल रही है, जिसने हमें अपने-अपने घरों में कैद कर दिया। बीमारी तो है ही, उससे ज्यादा दहशत है। बच्चे, बूढ़े और युवा सब अवसाद में हैं। इस समय को भी हमें जीना है। इसे हम सहजतापूर्वक जी सकें, इसमें हमारा शास्त्रीय संगीत महत्वपूर्ण सम्बल है। हम इस महामारी के कारण अपने मनोमय जगत में डरे हुए हैं, भयग्रस्त हैं, अवसाद इसका परिणाम है। और दूसरे तरह की बीमारियों के लक्षण भी हमारे शरीर में दिखाई देते हैं। ऐसे सैकड़ों लोग जो शास्त्रीय संगीत के रसिक हैं, उन्होंने इस कठिन

समय को सफलतापूर्वक शांति और आनंद से बिताया और बिता रहे हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि किसी भी आसन्न संकट में हमें स्थिर होने के लिए, शांत होने के लिए, सहज होने के लिए और संतुलित होने के लिए शास्त्रीय संगीत का सहारा लेना चाहिए।

जीवन में अधिकांश परेशानियाँ हमारे सूक्ष्म शरीर के असंतुलित होने के कारण हैं। जिस तरह संगीत में एक लय है, उसी प्रकार जीवन में भी लय होती है। आरोह- अवरोह है, कभी इस देश के गाँव-गाँव में लोग गा-बजा लिया करते थे, बच्चे के जन्म से लेकर मृत्यु तक हमारे जीवन में संगीत समाया था। हर पर्व और त्यौहार पर महिलाएँ, बच्चे, बूढ़े और युवक गा रहे थे, नाच रहे थे और उत्सवधर्मी थे। तब आत्म हत्याएँ इतनी न होती थीं, जितनी अब हो रही हैं। `डिप्रेशन' शब्द से लोग अपरिचित थे। अब हर कोई डिप्रेशन में है, युवा और बच्चे तक आत्म हत्याएँ कर रहे है। क्यों ? क्योंकि जीवन की लय खो गई है, लय के साथ हमने जीना छोड़ दिया है।

हमें मालूम है कि `वह' निर्गुण-निराकार है। परन्तु सृजन के लिए, वह समय-समय पर साकार रूप में प्रकट है। इसलिए शास्त्रीय संगीत में भक्ति की बड़ी महिमा है। इसमें लीला गायन है। कलाओं में लीला का प्रकटीकरण है। शास्त्रीय नृत्यों में लीला दिग्दर्शन है। कहीं कथक में एकल प्रस्तुति के द्वारा, कहीं बैले के रूप में सामूहिक नृत्य नाटिकाओं में। वहीं गायन में भक्ति संगीत बेहद लोकप्रिय है। पुष्टिमार्ग में सूरदास एवं अष्टछाप के कवि-गायक यही कह रहे थे। वल्लभ सम्प्रदाय में, पुष्टि मार्ग में अष्ट पहर की सेवा-पूजा है। यहाँ सेवा शब्द महत्वपूर्ण है अर्थात पहले हम अपने इष्ट की सेवा कर रहे हैं, साथ-साथ पूजा-अर्चना, वंदना इत्यादि। माँ यशोदा इसका सबसे बड़ा उदाहरण हैं। पहले बालक को जगाना है, भोर हो गया है। यहाँ सुबह का गीत है, जिसमें ठाकुर जी को जगाया जा रहा है। फिर उन्हें नहलाना- धुलाना है। उसके गीत हैं। कलेवा, सुबह का नाश्ता, इसके भोग गीत हैं। फिर गोचरण, वन विहार, वहाँ की लीलाएँ, इसके गीत हैं। शाम को वन से वापसी, रात्रि भोजन (भोग) तत्पश्चात लोरी गाकर सुलाना। यह हुई अष्टपहर की पूजा - इसका शास्त्रीय संगीत में बहुत माधुर्य पूर्ण विस्तार है। प्रेम में संयोग और विप्रलंभ का अद्भुत वर्णन है और उसका प्रभावशाली गायन है। पुराणों में और भी कई कथाएँ हैं। नारी के शक्ति स्वरूप होने का वर्णन है। इनका प्रकटीकरण हमारी कलाओं में है। चाहे नृत्य हो या गायन, इनमें सगुण भक्ति की पराकाष्ठा है।

हम जानते हैं कि सर्व शक्तिमान अमूर्तन में है। `बिन पग चले, सुने बिन काना' अमूर्तन का पक्ष अनंत और अद्भुत है। इससे परिचित कराना, इसमें गोते लगाना और इसमें अपनी स्थूल सत्ता को खो देना, भारतीय शास्त्रीय संगीत का परम उद्देश्य है। रागदारी इसी शैली में गायन है और वादन भी। गिनती में सिर्फ सात स्वर हैं। इनके क्रमचय और समुच्चय से हजारों राग बने और बनते चले जा रहे हैं। यहाँ अनन्त विस्तार है। आनन्द का विस्तृत संसार है यह कोई ओर-छोर नहीं। बस डूबते जाइए, डूबते जाइए। इसी को हमारे यहाँ समयातीत कहा गया है। कोई भी राग गायन घंटे भर से कम नहीं होता। आपको समय का पता ही तब चलता है, जब गायक राग समाप्त कर देता है। वह और विस्तार कर सकता है। वहाँ पूरी गुंजाइश है। वह जो आपको दे पाता है, अंजुरी भर जल से ज्यादा तो नहीं है। इस प्रकार अमूर्तन संसार से हमारा वर्तमान संभलता है। हमारे शास्त्रीय नृत्य, संगीत और सभी अमूर्तन कलाएँ यही कर रही हैं। संगीत उत्सवों, सम्मेलनों और समारोहों में जाकर आप इसे प्रत्यक्ष महसूस कर सकते हैं। संगीत समय से समयातीत हो जाने की यात्रा है।

मध्य प्रदेश भारत का हृदय प्रदेश है ग्वालियर, मैहर और इंदौर यहाँ शास्त्रीय संगीत के बड़े घराने हैं। मध्यप्रदेश शासन की ओर से यहाँ प्रतिवर्ष शास्त्रीय संगीत के अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन आयोजित होते हैं, यह अपनी जड़ों का स्मरण और उन्हें सिंचित करने का उपक्रम है। संकट में संगीत के सम्बल को जानने-समझने का भी इससे अवसर मिलता है। मैं फिर कहना चाहूँगा कि हमारे सूक्ष्म शरीर की हलचल हमारे स्थूल शरीर को प्रभावित करती है और भारतीय शास्त्रीय संगीत सूक्ष्म शरीर को संतुलित करता है, जिसके लिए आपको शांत होकर बैठना है। शांत होकर सुनना है। धीरे-धीरे आपके भीतर रस प्रवाहित होने लगता है और आप अपने आपको आनंदित महसूस करने लगते हैं।

नृत्य, वादन और गायन - एक विस्तृत संसार है इन कलाओं का। मध्य प्रदेश का इनमें अप्रतिम योगदान है, ये सारी कलाएँ हमारे अन्तर जगत को समृद्ध करती हैं। मध्य प्रदेश के ग्वालियर शहर में तानसेन समारोह स्थूल से सूक्ष्म की ओर यात्रा में एक सोपान है। इस यात्रा में आपको आमंत्रित करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है। `शहरयार' की एक पंक्ति है- `मैं जिस्म के हिसार में महसूर हूँ अभी, वो रूह की हदों से भी आगे निकल गया।'

देवकी पण्डित - गायन

मधुर एवं प्रभावशाली वाणी की धनी देवकी पण्डित पद्म विभूषण गानसरस्वती किशोरी अमोनकर एवं पद्मश्री पण्डित जितेंद्र अभिषेकी की शिष्या हैं। उनकी गायिकी उनके मूर्धन्य गुरुओं और संगीत के प्रति उनके अद्वितीय सौंदर्य दृष्टिकोण से प्रभावित है। आपकी माता श्रीमती उषा पण्डित ने आपको संगीत से परिचित कराया। मात्र नौ वर्ष की छोटी उम्र में आपने संगीत की औपचारिक शिक्षा पण्डित वसंतराव कुलकर्णी के मार्गदर्शन में प्राप्त की। इसके पश्चात आपने आगरा घराना के पण्डित बाबनराव हल्दनकर एवं डॉ. अरुण द्रविड़ से संगीत का मार्गदर्शन प्राप्त किया। आगरा घराने से प्रशिक्षण लेकर, उन्होंने बारह साल की उम्र से ही पेशेवर गायन शुरू किया। अपनी माँ और अपने गुरुओं से गायन कला की बारीकियाँ सीखने के साथ, देवकी ने निपुण प्रतिभावान गायिका के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। आपको आदित्य बिड़ला कला किरण पुरस्कार, मेवाती घराना पुरस्कार, महाराष्ट्र शासन द्वारा 'बेस्ट फीमेल प्लेबैक सिंगर' पुरस्कार एवं दूसरे पुरस्कारों तथा केसरबाई केरकर छात्रवृत्ति से अलंकृत किया गया है। बहुमुखी प्रतिभा हासिल करने के लिए उनकी संवेदनाओं और उत्सुकता ने उन्हें भारतीय शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त जैसे भजन, गजल, अभंग एवं फिल्मों में गीत भी गाने को प्रेरित किया। आपने फिल्म, टेलीविजन तथा शास्त्रीय संगीत प्रदर्शनों में कई सुप्रसिद्ध कलाकारों के साथ काम किया है। अपनी मधुर आवाज़ और आकर्षक व्यक्तित्व से देवकी पण्डित ने गायन की अपनी अनूठी शैली विकसित की है और अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन के माध्यम से कला प्रेमियों के दिलों में विशेष स्थान गढ़ा है।

संजय कुमार मलिक- ध्रुपद गायन

पण्डित श्री अभय नारायण मलिक के पुत्र संजय कुमार मलिक, तानसेन परम्परा के विश्व प्रसिद्ध संगीत घराना, दरभंगा मलिक घराना (गौहर वाणी) से आते हैं। इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़-छत्तीसगढ़ से आपने स्नातक (संगीत) तथा स्नातकोत्तर (हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत) में उपाधि प्राप्त की। आपको पद्मश्री स्वर्गीय रामचतुर मलिक से भी ध्रुपद की शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। संजय कुमार मालिक को उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत एवं कला अकादमी, भोपाल तथा नॉर्थ जोन कल्चरल सेंटर-इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश द्वारा संगीत में छात्रवृत्ति प्रदान की गयी। देश के अनेक प्रतिष्ठित संगीत कला मंच एवं उत्सवों में ध्रुपद गायन का जादू बिखेर चुके संजय कुमार मलिक ने फेस्टिवल ऑफ इंडिया के अंतर्गत जर्मनी के कई शहरों में प्रस्तुतियाँ दी हैं।

अभिषेक लहरी- सरोद

आल इंडिया रेडियो और दूरदर्शन के 'ए' श्रेणी के सरोद वादक अभिषेक लहरी, राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किए जाने वाले सबसे कम आयु के कलाकार हैं। मात्र छह वर्ष के आयु में आपने अपने पिता एवं गुरु सुप्रसिद्ध सरोद कलाकार पंडित आलोक लहरी के मार्गदर्शन में सरोद का प्रशिक्षण प्राप्त करना आरम्भ किया। अभिषेक का सरोद वादन तीन प्रमुख घराना शाहजहाँपुर, सेनिया मैहर एवं सेनिया बंगश घराना (ग्वालियर) का सम्मिश्रण है। अभिषेक के सरोद वादन में सूक्ष्मता, सौंदर्यबोध, आध्यात्मिकता झलकती है जो कि संगीत प्रेमियों को मंत्रमुग्ध करने को विवश कर देती है। राष्ट्रीय छात्रवृत्ति एवं कई प्रमुख पुरस्कारों से सम्मानित अभिषेक को यूरोप पार्लियामेंट फ्रांस में सरोद वादन कला का प्रदर्शन करने का गौरव प्राप्त है। आई.सी.सी.आर. के सूचीबद्ध सदस्य कलाकार अभिषेक ने देश विदेश के अनेक कला मंचों पर प्रस्तुतियाँ दी हैं तथा संगीत कला जगत में विशेष स्थान प्राप्त किया है। आपकी सरोद कला की कैसेट्स तथा सीडी भी जारी की गईं हैं जिन्हें संगीत प्रेमियों के बीच बहुत सराहा गया है।

अभय रुस्तुम सोपोरी - संतूर

किसी एक व्यक्ति में अनेक व्यक्तित्व के गुणों को कैसे समाहित किया जा सकता है इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं देश के युवा संतूर वादक अभय रुस्तुम सोपोरी, जिन्होंने एक संगीत संचालक और संगीत निर्देशक के रूप में भी अपनी प्रतिभा का साधिकार परिचय दिया है।

अभय का जन्म कश्मीर के एक अत्यंत प्रतिष्ठित परिवार में हुआ जिसमें संगीत की कला विगत 300 वर्षों से पीढ़ी दर पीढ़ी विकसित और संवर्धित होती आई है। इन्होने अपने पितामह पण्डित शंभु नाथ सोपोरी (उन्हे कश्मीर में संगीत का पितामह माना जाता है) और पिता म्यूजिक लीजेंड पण्डित भजन सोपोरी से संगीत की विधिवत् शिक्षा गुरु शिष्य परम्परा के अनुसार प्राप्त की है। इनके वादन में गायिकी और तंत्रकारी दोनों अंगों का संगम देखने को मिलता है। तीन नये रागों के सर्जक - राग महाकाली, शारदा और निर्मल कौंस, अभय ने गायिकी अंग की कई रचनाएँ भी रची हैं। कश्मीर और वहाँ के संगीत को विश्व स्तर पर लोकप्रिय बनाने में अभय की अहम भूमिका है।

अभय को इस बात का भी सम्मानित श्रेय प्राप्त है कि कई सम्मान को प्राप्त करने वाले ये युवा संगीतकार हैं। इनमें संयुक्त राष्ट्र (यूनाइटेड नेशंस) द्वारा मान्यता प्राप्त जी.जी.एफ. का महात्मा गाँधी सेवा मैडल - गाँधी ग्लोबल पीस अवार्ड 2020, आल इंडिया रेडियो द्वारा टॉप ग्रेड अवार्ड 2019, संसद भवन में प्रदत्त अटल शिखर सम्मान 2017, डॉ एस. राधाकृष्णन नेशनल मीडिया सम्मान 2017 सहित अनेक सम्मान और उपाधियाँ शामिल हैं।

मोहम्मद अमान खाँ – गायन

मोहम्मद अमान का जन्म 1992 को राजस्थान के टोंक जिले में हुआ। आपने गायन की शिक्षा पाँच वर्ष की आयु से अपने दादा उस्ताद अमीर मोहम्मद खाँ से लेना शुरू किया। उस्ताद अमीर मोहम्मद खाँ आगरा और पटियाला घराने के वरिष्ठ कलाकार थे। तालीम का ये सिलसिला लगभग बीस वर्ष चला। दादा जी के देहावसान होने के पश्चात आपने पिता उस्ताद ज़फ़र मोहम्मद खाँ से गाने की तालीम ले रहे हैं। मोहम्मद अमान आकाशवाणी एवम् दूरदर्शन के ए-ग्रेड कलाकार है। 2012-13 में जी टीवी के 'सा रे गा मा पा' के 35वें ऐपिसोड में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का नया कीर्तिमान स्थापित किया। आपने देश-विदेश में गायन के सफल प्रोग्राम किए जिनमें प्रमुख हैं- बाबा हरिवल्लभ संगीत समारोह -जालंधर, वेस्ट बंगाल म्यूजिक फ़ेस्टिवल-कोलकाता, उस्ताद अहमद जान खान संगीत समारोह-दिल्ली, इंडियन म्यूजिक फ़ेस्टिवल एवं पंचम निषाद-मुम्बई, बाबा अलाउद्दीन खाँ संगीत समारोह -मैहर, विरासत फ़ेस्टिवल-देहरादून, संकट मोचन संगीत समारोह-बनारस तथा साथ ही देश के कई शहरों में गायन की प्रस्तुतियाँ शामिल हैं। 2019 में आपको 550 वीं गुरुनानक जयंती पर इंग्लैण्ड में प्रस्तुति के लिए आमंत्रित किया गया। हाल ही में आपने एक फिल्म बंदिश बैंडिट्स वेब सीरीज़ में जुगलबंदी की है जिसका म्यूजिक शंकर एहसान लॉय ने दिया है।

अब्दुल मजीद खाँ एवं अब्दुल हमीद खाँ – सारंगी जुगलबंदी

उस्ताद अब्दुल मजीद खाँ, अब्दुल हमीद खाँ का जन्म ग्वालियर घराने के एक सांगीतिक परिवार में हुआ। आप दोनों ने सारंगी की शिक्षा अपने पिता उस्ताद बशीर खाँ साहब एवं नज़र हुसैन खाँ साहब से प्राप्त की। आप दोनों की सारंगी जुगलबंदी की प्रस्तुतियाँ ताज महोत्सव, हरिदास समारोह, चक्रधर समारोह, जीवाजीराज समारोह, द ग्वालियर हेरिटेज फेस्टिवल आदि में हो चुकी हैं।

अब्दुल मजीद खाँ- आप देश के विख्यात सारंगी वादक है। आपको पद्मश्री उस्ताद अब्दुल लतीफ खाँ एवं विश्वविख्यात सारंगी वादक पद्मविभूषण पं. रामनारायण जी से भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत एवं कला अकादमी से छात्रवृत्ति प्राप्त अब्दुल मजीद ने देश के सभी सुप्रसिद्ध मंचों एवं कलाकारों के साथ सारंगी की सुरीली संगत की है एवं तानसेन समारोह में चौदह वर्षों से अभी तक संगत करते आ रहे हैं। वर्तमान में आप आकाशवाणी में ए-ग्रेड सारंगी वादक के पद पर कार्यरत हैं।

अब्दुल हमीद खाँ- आप देश के युवा सारंगी वादक हैं। आपने 1999 में सारंगी वादन में गोल्ड मेडल प्राप्त किया। आप आकाशवाणी के ए-ग्रेड कलाकार हैं। आपने देश के सभी सुप्रसिद्ध कलाकारों के साथ संगत की है एवं देश के सभी प्रसिद्ध मंचों पर सारंगी वादन करने आ रहे हैं। वर्तमान में आप राजा मानसिंह तोमर विश्वविद्यालय में सारंगी वादक के पद पर कार्यरत हैं।

देवानन्द यादव – ध्रुपद गायन

वर्ष 1976 में जन्में देवानन्द यादव बिहार के मधेपुरा जिला से संबंध रखते हैं। आपने सुगम संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा अपने माता-पिता के मार्गदर्शन में ग्रहण की। इसके पश्चात आपने सात वर्ष तक हिंदुस्तानी शास्त्रीय/उप शास्त्रीय संगीत ख्याल, ठुमरी, टप्पा की शिक्षा गुरु पंडित लाला भूपेंद्र नारायण के सानिध्य में प्राप्त की। प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद से संगीत प्रभाकर एवं संगीत प्रवीण उपाधि से सम्मानित देवानन्द को उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत अकादमी, भोपाल के ध्रुपद केंद्र द्वारा राष्ट्रीय स्तर की छात्रवृत्ति प्रदान की गयी तथा आपने प्रसिद्ध ध्रुपद गुरु उस्ताद जिया फरीदउद्दीन डागर के मार्गदर्शन में `डागर वाणी' के पारम्परिक गुरुकुल प्रणाली के अंतर्गत हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का गहन अध्यन किया। आपने देश के कई महत्वपूर्ण संगीत कला मंचों पर ध्रुपद गायिकी का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया तथा अनेक ध्रुपद कार्यशालाओं में उस्ताद फरीदउद्दीन डागर के संग भाग लिया। आप ऑल इंडिया रेडियो तथा दूरदर्शन पर अपनी कला का नियमित प्रदर्शन करते आ रहे हैं तथा वर्तमान में मुंबई, पुणे एवं औरंगाबाद में ओंकार संगीत केन्द्र से छात्रों को प्रशिक्षित कर रहे हैं।

डेनियल रावि रैंजेल (मैक्सिको) – गिटार

मैक्सिको के डेनियल रावि रैंजेल एक बहुमुखी गिटारवादक और संगीतकार हैं, उन्होंने प्रसिद्ध फ्लामेंको गिटार वादक फर्नांडो मार्टिनेज़ पेराल्टा के सानिध्य में फ्लेमेंको और क्लासिकल गिटार में अपना संगीत प्रशिक्षण प्राप्त किया। डेनियल ने अपने मूल देश के विभिन्न शहरों में कई परियोजनाओं के लिए संगीत रचा और प्रस्तुतियाँ दीं। वह मेक्सिको और यूरोप के `मारसमा ट्रिओ' के प्रमुख गिटारवादक रहे हैं। वर्ष 2010 में डेनियल भारत आए तथा विभिन्न नृत्य एवं संगीत प्रस्तुतियों के लिए संगीत रचा। आपने प्रसिद्ध नृत्य प्रदर्शनों `नॉट यूअर मदर्स' एवं `बीनीथ द टेमरिंड ट्री' का निर्देशन किया तथा संगीत रचा। भारतीय शास्त्रीय संगीत और भारतीय वाद्य यंत्रों के प्रति आकर्षण ने उन्हें सितार का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया। डेनियल नई दिल्ली स्थित लैटिन म्यूजिक बैंड, `लैटिनजम' के गिटारिस्ट हैं। आई.सी.सी.आर. के सहयोग से कमानी आडिटोरियम में उनकी प्रस्तुति एवं भारत के कई प्रतिष्ठित मंचों पर मनमोहक प्रदर्शन दिये हैं। नई दिल्ली में आपने `पल्सअंसांबल' के सदस्य के रूप में कई संगीतकारों तथा नृत्य कलाकारों का साथ दिया है।

विवेक कर्महे – गायन

विवेक कर्महे, ग्वालियर घराने के उदीयमान शास्त्रीय गायक हैं। माता डॉ. कल्पना कर्महे एवं पिता श्री राजीव कर्महे से बचपन से प्रेरणा लेकर भजन एवं अभंग गायन प्रारम्भ किया। ख्याल गायिकी, उपशास्त्रीय संगीत, ठुमरी, भजन एवं अभंग पर आपका समान अधिकार है। आल इंडिया रेडियो में शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय के बी.हाईग्रेड कलाकार विवेक का चयन, श्री सत्यसाई मीरपुरी कॉलेज ऑफ म्यूजिक, आंध्रप्रदेश में हुआ। यहाँ से आपने शास्त्रीय संगीत की विधिवत् शिक्षा ग्रहण की। भिंडी बाजार घराने की गायिका विदुषी कुमुदनी मुन्दकुर, पद्मविभूषण स्व. गिरिजादेवी जी के पास रहकर ठुमरी गायिकी, पद्मश्री पं. उल्हास कशालकर जी, पण्डित ओंकार दादरकर से ख्याल गायकी एवं तबले का प्रशिक्षण पंजाब घराने के पण्डित निशिकांत बरोडेकर से प्राप्त किया। खैरागढ़ इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय से बी.ए. एवं एम.ए. की डिग्री गोल्ड मेडल के साथ प्राप्त की। आपको भारत रत्न डॉ.एम.एस. सुब्बालक्ष्मी फैलोशिप अवार्ड से सम्मानित किया गया है।

पुष्पराज कोष्टी एवं भूषण कोष्टी – सुरबहार जुगलबंदी

दुर्लभ वाद्य सुरबहार वादन के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लब्धप्रतिष्ठ पुष्पराज कोष्टी का जन्म संगीतज्ञों के परिवार में हुआ। छोटी उम्र से ही आपको उस्ताद हाफिज खाँ के शिष्य पिता श्री रामलाल कोष्टी ने सितार का प्रशिक्षण प्रदान किया। आपने सुप्रसिद्ध वीणा वादक उस्ताद जिया मोहिउद्दीन डागर से पंद्रह वर्ष तक संगीत की शिक्षा प्राप्त कर वाद्य वादन में महारत हासिल की एवं तकनीकी पहलुओं को आत्मसात किया। आपको उस्ताद जिया फरीदउद्दीन डागर से भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। ऑल इंडिया रेडियो के 'ए' श्रेणी के कलाकार श्री पुष्पराज को संगीत नाटक पुरस्कार, उस्ताद लतीफ खाँ सम्मान आदि से विभूषित किया गया है। देश-विदेश के अनेक प्रतिष्ठित मंचों, सम्मेलनों पर जादुई छटा बिखेर चुके श्री पुष्पराज के संगीत को इंडिया आर्काइव म्यूजिक, न्यूयॉर्क द्वारा रिकार्ड किया गया। आपके वादन की म्यूजिक सीडी भी जारी की गई हैं।

भूषण कोष्टी संगीतज्ञ परिवार की तीसरी पीढ़ी से आते हैं। आपने मात्र चार वर्ष की आयु में सितार वादन की शिक्षा अपने पिता सुप्रसिद्ध सितार एवं सुरबहार वादक पंडित पुष्पराज कोष्टी के मार्गदर्शन में ग्रहण की। आपको सितार वादन का प्रशिक्षण अपनी माता श्रीमती ज्योति कोष्टी से प्राप्त करने का अवसर भी प्राप्त हुआ। बीस वर्ष की आयु में भूषण ने सुरबहार वादन प्रारम्भ किया तथा इसका प्रशिक्षण अपने पिता के मार्गदर्शन में जारी रखा। आपके अलाप, गहरी और बारीक सुरों में निपुणता प्रदर्शित करते हैं जो कि डागर वाणी परम्परा तकनीक का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। आपकी गायिकी वाक्यांशों की सादगी, रागों के स्वरूप को परिभाषित और रेखांकित करती है।

धनंजय जोशी- गायन

युवा प्रतिभावान शास्त्रीय संगीत कलाकार धनंजय जोशी ने पंडित कमलाकर परलीकर से शास्त्रीय संगीत में पाँच वर्ष तक प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसके उपरान्त आपने किराना घराना के प्रसिद्ध गायक पंडित रमेश कनोले के मार्गदर्शन में पंद्रह वर्ष तक संगीत कला का गहन अध्ययन किया। पिछले पंद्रह वर्षों से आप सुप्रसिद्ध अंतर्राष्ट्रीय कलाकार पंडित अजय पोहनकर के शिष्य हैं । वाणी की गुणवत्ता, आलाप तथा लयकारी में निपुणता तथा तान में स्पष्टता आपकी गायिकी की विशेषताएँ हैं। नाट्य संगीत क्षेत्र के एक उत्कृष्ट कलाकार धनंजय ने कई संगीत नाट्य में गायक-नट के रूप में अपनी कला की खुशबू बिखेरी है तथा आपको महाराष्ट्र शासन की ओर से सर्वश्रेष्ठ गायक-नट के पुरस्कार तथा अनेक सम्मानों से विभूषित किया गया है। आई.सी.सी.आर. के सूचीबद्ध तथा आल इंडिया रेडियो के 'ए' श्रेणी के कलाकार धनंजय ने देश-विदेश के कई प्रमुख संगीत उत्सवों एवं मंचों पर अपनी गायिकी से कला पारखियों को मंत्रमुग्ध किया है। आपको पंडित अजय पोहनकर के संग भी कई प्रतिष्ठित उत्सवों में भी संगीत कला का प्रदर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

कमल कामले - वायोलिन

पंडित कमल कामले जी का जन्म इंदौर में हुआ। इनकी प्रारंभिक शिक्षा अपने पिता गुरु स्वर्गीय छोटेलाल जी कामले तथा सेनिया घराने के किंवदंती बीनकार उस्ताद बाबू खान साहब के शिष्य स्वर्गीय श्री जगदीश प्रसाद जी से ग्रहण की तत्पश्चात विख्यात सारंगी नवाज उस्ताद मोइनुद्दीन खान साहब इंदौर वालों से विधिवत शिक्षा ग्रहण की। अपनी कला प्रतिभा के सम्मान स्वरूप कमल कामले को राष्ट्रीय छात्रवृत्ति प्राप्त हुई। सुर सिंगार संसद मुंबई द्वारा सुरमणि की उपाधि से विभूषित किया गया। सन् 1981 में आकाशवाणी के अखिल भारतीय संगीत प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर राष्ट्रपति स्वर्ण पदक प्राप्त किया। कमल ने देश एवं विदेशों के कई प्रतिष्ठित मंचों पर अपनी प्रस्तुति देकर श्रोताओं की दाद बटोरी। आप एक प्रतिभा सम्पन्न म्यूजिक कम्पोजर भी हैं एवं कई म्यूजिक कंपनियों द्वारा इनकी अनेक कैसेट्स एवं सीडी रिलीज की गई हैं। कमल कामले अमेरिका, इंग्लैंड, थाईलैंड के विभिन्न शहरों में अपनी प्रस्तुति दे चुके हैं। वर्तमान में आप टॉप ग्रेड कलाकार हैं एवं आकाशवाणी इंदौर में विभागीय कलाकार के रूप में कार्यरत हैं।

श्रीकांत कुलकर्णी - बाँसुरी

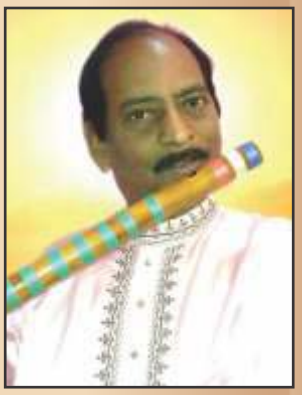

अत्यंत प्रतिभावान बाँसुरी वादक श्रीकांत कुलकर्णी का जन्म एक प्रतिष्ठित संगीत परिवार में हुआ। आपने अपने पिता स्वर्गीय श्री अम्बादास कुलकर्णी से बाँसुरी की शिक्षा प्राप्त की। श्रीकांत ने प्रसिद्ध वायोलिन वादक पंडित श्री अनंत पुरंदरे जी से बाँसुरी में गायिकी अंग, ध्रुपद अंग एवं अलाप, जोड़, झाला की शिक्षा प्राप्त की। तत्पश्चात आपने पंडित श्री राजेंद्र प्रसन्ना जी-दिल्ली से बाँसुरी की विधिवत शिक्षा ग्रहण की। अखिल भारतीय गंधर्व विश्वविद्यालय मण्डल, मुम्बई से संगीत विशारद, प्रयाग संगीत समिति, इलाहबाद से प्रभाकर एवं प्रवीण, राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं आर्ट्स विश्वविद्यालय से सर्टिफिकेट कोर्स तथा भारतीय संगीत व संस्कृति परिषद, कोलकाता से स्नातकोत्तर की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आकाशवाणी के 'बी' श्रेणी के कलाकार श्रीकांत ने देश के कई कला सभाओं एवं टी.वी. चैनल्स पर सफल प्रस्तुतियाँ दी हैं। संगीत कला क्षेत्र में मनमोहक बाँसुरी वादन से विशिष्ट स्थान बना चुके श्रीकांत बाँसुरी की विधिवत शिक्षा भी छात्रों को प्रदान कर रहे हैं।

संजीव अभ्यंकर- गायन

मेवाती घराना के गुरु संजीव अभ्यंकर का जन्म वर्ष 1969 में हुआ। मधुर एवं ओजस्वी वाणी के धनी संजीव ने मात्र आठ वर्ष की आयु से हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ग्रहण करना आरम्भ की। आपको अपनी माता डॉ. शोभा अभ्यंकर तथा पंडित पिम्पल खरे (ग्वालियर घराना) एवं मेवाती घराना के पद्म विभूषण पंडित जसराज जी के सानिध्य में संगीत कला निखारने का अवसर प्राप्त हुआ। ग्यारह वर्ष की अल्पायु में मुंबई के कला मंच पर पहली बार अपनी कला का जादू बिखेरा। राष्ट्रपति पुरस्कार, मध्यप्रदेश के कुमार गंधर्व सम्मान आदि से विभूषित संजीव ने देश के अनेक प्रतिष्ठित संगीत समारोह एवं कला मंचों पर प्रस्तुतियाँ दी है तथा यू.एस.ए., कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, यूरोप, अफ्रीका एवं मिडिल ईस्ट में कई प्रस्तुतियों से कला प्रशंसकों के मध्य एक विशिष्ट स्थान बनाया। आपको दुनिया के 200 से अधिक शहरों में जादुई वाणी का रंग बिखेरने का श्रेय जाता है। 'गॉडमदर'' में आपके अद्भुत प्रदर्शन के साथ-साथ, मराठी अभंग, भावगीतों तथा हिन्दी-संस्कृत भजन की प्रस्तुतियाँ उनकी बहुमुखी प्रतिभा प्रदर्शित करती है। स्वयं द्वारा रचित शास्त्रीय संगीत रचनाओं के साथ-साथ आपने मेवाती घराना रचनाओं (बन्दिशों) के पहले से मौजूद विस्तृत प्रदर्शनों की सूची में अपना महत्वपूर्ण योगदान दर्ज कराया है।

रामजी लाल शर्मा - पखावज

पंडित रामजी लाल शर्मा ख्यातिलब्ध मृदंग कलाकार हैं। आपको 'मृदंग सम्राट' महाराज पंडित कूदऊ सिंह (दतिया-मध्यप्रदेश) के वंशधर एवं प्रतिनिधि 'पद्मश्री पंडित अयोध्या प्रसाद' के पुत्र होने का गौरव प्राप्त है। आपके पूज्य दादाजी स्व. पं. गया प्रसाद जी मृंदगाचार्य एवं पिता स्व. पं. अयोध्या प्रसाद जी मृंदगाचार्य रामपुर दरबार के राजाश्रय में (पखावज वादक) संगीतज्ञ पद पर सुशोभित रहे तथा जनपद रामपुर के नरेश नवाब रजा अली खान के राजगुरु पद को सुशोभित किया। रामपुर में वर्ष 1951 में जन्मे पंडित रामजी लाल शर्मा ने मात्र पाँच वर्ष की में पखावज की शिक्षा अपने पिता से ग्रहण करना प्रारम्भ की। अखिल भारतीय ध्रुपद मेला वाराणसी द्वारा 'महाराज बनारस काशी नरेश पुरस्कार', 'संगीत शिरोमणि', कानपुर की मानद उपाधि 'भारतीय संगीत विधापीठ', राष्ट्रीय छात्रवृत्ति, राष्ट्रीय पुरस्कार, लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार तथा कई दूसरे प्रतिष्ठित सम्मानों एवं उपाधियों से अलंकृत पंडित रामजी लाल शर्मा ने देश के अनेक मूर्धन्य गायकों, वादकों एवं नृत्यकारों के साथ पखावज संगत और मुख्य रूप से पद्मभूषण उस्ताद अल्ला रक्खा के साथ विलक्षण जुगलबंदी कर अभूतपूर्व ख्याति अर्जित की है। आकाशवाणी नई दिल्ली के वरिष्ठ उच्च श्रेणी से सम्मानित पंडित रामजी लाल शर्मा के पखावज वादन की आडियो-विडियो आकाशवाणी नई दिल्ली, लखनऊ एवं भोपाल संग्रहालय तथा संगीत नाटक अकादमी दिल्ली एवं लखनऊ द्वारा संरक्षित की गई हैं।

दारूश अलंजारी, हमता बागी, मैशम्म अलीनागियान, ईरान - विश्व संगीत

दारुश अलंजारी, हमता बागी एवं मैशम्म अलीनागियान ईरान के प्रमुख संगीतज्ञों में से हैं। आप उत्कृष्ट केमांचे वादकों में से एक हैं। केमांचे ईरानी शास्त्रीय वाद्य यंत्र है। पिछले सोलह वर्षों से अपनी संगीत कला का प्रदर्शन करती आ रही इस तिकड़ी ने कला जगत में अपने हुनर के बल पर जादू बिखेरा है तथा संगीत कला जगत में एक अमिट छाप छोड़ी है। दुनिया के अनेक देशों में संगीत कला का प्रदर्शन करते हुए आपने वहाँ के संगीत संस्कृति का ज्ञान अर्जित किया है तथा कई प्रकल्पों में सहयोग तथा महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वर्तमान में आपके द्वारा वर्ल्ड म्यूजिक प्रोजेक्ट 'नारंग आंसंबल' संचालित किया जा रहा है।

प्रशांत एवं निशांत मलिक – ध्रुपद गायन

दरभंगा घराने की संगीत परम्परा की तेरहवी पीढ़ी के प्रतिनिधि प्रशांत और निशांत मलिक `मलिक बन्धु' के रूप में जाने जाते हैं। देश के ध्रुपद गायिकी के अग्रणी ध्वज वाहक प्रशांत और निशांत मलिक ने संगीत का प्रशिक्षण अपने दादा मूर्धन्य पंडित विदुर मलिक एवं पिता ध्रुपद गुरु श्री प्रेम कुमार मलिक से प्राप्त किया। भारतीय संगीतज्ञों में आपका विशिष्ट स्थान हैं तथा भावपूर्ण आवाज़ और परिपक्वता की झलक आपके गायन से प्रदर्शित होती है। मधुर वाणी तथा प्रभावशाली गायन शैली के बल पर आपने गौहर बानी तथा खण्डर बानी के अग्रणी प्रतिपादकों के रूप में छवि स्थापित की है। आल इंडिया रेडियो और दूरदर्शन के `ए' ग्रेड कलाकार मलिक बन्धु को उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ युवा अवार्ड, बिहार कला पुरस्कार, भारत सरकार की राष्ट्रीय छात्रवृत्ति तथा सुरसिंगार संसद द्वारा सुरमणि की उपाधि तथा कई महत्वपूर्ण सम्मानों से विभूषित किया गया है। भारत के लगभग सभी प्रतिष्ठित संगीत समारोह तथा विश्व के पच्चीस देशों में अपनी मनमोहक कला का लोहा मनवाने वाले मलिक बंधु द्वारा भारत और विदेशों में ध्रुपद की कार्यशालाएँ संचालित की गई हैं। आई.सी.सी.आर. के सूचीबद्ध कलाकार मलिक बंधु को कई प्रतिष्ठित संगोष्ठियों में वक्ता/विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया गया है तथा आप विभिन्न कला एवं सांस्कृतिक संगठनों के सदस्य हैं। मलिक बंधु द्वारा देश विदेश में कई संगीत कार्यशालाएँ आयोजित की गईं हैं और उनके द्वारा युवाओं को पण्डित विदुर मलिक ध्रुपद अकादमी, प्रयागराज के माध्यम से ध्रुपद का प्रशिक्षण भी प्रदान किया जा रहा है।

सुनील पावगी – गिटार

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के वायोलिन वादक स्व. पद्मभूषण पण्डित वी.जी. जोग के शिष्य डॉ. सुनील पावगी ने हवाईन गिटार जैसे पाश्चात्य वाद्य पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत प्रस्तुत करके ख्याति प्राप्त की है। आपको इमदादखानी घराने के प्रसिद्ध सितार वादक उस्ताद विलायत खाँ के शिष्य पण्डित गिरिराज से भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। डॉ. सुनील पावगी ने शास्त्रीय संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा अपनी माता स्व. श्रीमती आशा पावगी से प्राप्त की जो कि प्रख्यात गायक स्व. नारायण महादेव जोशी की शिष्या थीं। आपने आकाशवाणी और दूरदर्शन सहित देश के अनेक प्रतिष्ठित संगीत समारोह में अपना शास्त्रीय गिटार वादन प्रस्तुत किया है।

डॉ. सुनील पावगी को `सुरमणि' सहित अनेक सम्मान प्राप्त हुए हैं। आपने विदेश में भी अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किए हैं तथा इस वाद्य के माध्यम से हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का प्रचार-प्रसार किया है। आपको शिक्षा के क्षेत्र में हवाईन गिटार को एक विषय के रूप में लाने का श्रेय जाता है। लखनऊ के प्रसिद्ध संस्थान-भातखण्डे संगीत विश्वविद्यालय में आपने वर्ष 2000 में इस वाद्य पर सर्वप्रथम शिक्षण प्रारम्भ किया। सम्प्रति आप ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर (हवाईन गिटार) के पद पर कार्यरत हैं तथा स्वरवाद्य विभाग के विभागाध्यक्ष हैं। आपने अभी तक देश-विदेश के लगभग 1000 विद्यार्थियों को हवाईन गिटार पर शास्त्रीय संगीत की शिक्षा दी है।

गणेश मोहन एवं रूपक कुलकर्णी - सितार एवं बाँसुरी जुगलबंदी

गणेश मोहन ने कड़े परिश्रम एवं संगीत तपस्या के बल पर स्वयं को देश के श्रेष्ठ संगीतज्ञ के रूप में स्थापित किया है। कला प्रेमियों के परिवार में जन्में गणेश ने अपने पिता के मार्गदर्शन में संगीत की शिक्षा ग्रहण की। रवीन्द्र भारतीय विश्वविद्यालय, कोलकाता से हिंदुस्तानी क्लासिकल इन्स्ट्रूमेंटल म्यूजिक में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त करने के बाद आपने विष्णुपुर घराना के सुप्रसिद्ध गुरु पंडित गोपाल नाग, पंडित मनीलाल नाग, पंडित अजय सिन्हा रे तथा पंडित अरविंद पारिख के मार्गदर्शन में संगीत कला का नियमित प्रशिक्षण प्राप्त करना प्रारम्भ किया। ऑल इंडिया रेडियो के 'ए' श्रेणी कलाकार गणेश बचपन से ही स्व. पंडित निखिल बनर्जी से प्रभावित हुए एवं उनकी शैली का अनुसरण करते रहे हैं। देश विदेश के कई संगीत मंचों पर अपनी कला का प्रदर्शन कर चुके हैं।

पंडित रूपक कुलकर्णी एक प्रसिद्ध उत्कृष्ट बाँसुरी वादक हैं। अल्पायु में ही आपके पिता पं. मल्हार राव कुलकर्णी ने बाँसुरी वादन की शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया। नौ वर्ष की आयु में आपको सुप्रसिद्ध बाँसुरी वादक पंडित हरिप्रसाद चौरसिया का शिष्य बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपने बाँसुरी वादन का गहन अध्ययन किया। शुद्ध शास्त्रीय या विश्व संगीत हो, पं. रूपक की एक उत्कृष्ट कलाकार के रूप में उपस्थिति कला प्रेमियों को मंत्रमुग्ध कर देती है। आप आकाशवाणी तथा आई.सी.सी.आर. के सूचीबद्ध के कलाकार हैं। देश-विदेश के लगभग सभी महत्वपूर्ण कला उत्सवों, मंचों पर प्रस्तुतियाँ दे चुके, पंडित रूपक को कई पुरस्कारों, सम्मानों से विभूषित किया गया है।

मधु भट्ट तैलंग - ध्रुपद गायन

आपको अपने पड़बाबा एवं बाबा स्वर्गीय पंडित गोपाल जी एवं पंडित गोकुल चन्द्र जी भट्ट द्वारा स्थापित की गयी संगीत परम्परा विरासत के रूप में प्राप्त हुई। सुविख्यात ध्रुपदाचार्य गुरु एवं पिता पंडित लक्ष्मण भट्ट तैलंग से आपने ग्वालियर एवं डागर घराना की ख्याल एवं ध्रुपद गायिकी की गहन तालीम प्राप्त की। संगीत एवं हिन्दी साहित्य में प्रथम स्थान गोल्ड मेडल सहित स्नातकोत्तर एवं डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में डीन, ललित कला संकाय एवं संगीत विभागाध्यक्ष पद को सुशोभित करने के साथ 35 वर्षों से संगीत का अध्यापन भी कर रही हैं। आप आकाशवाणी तथा दूरदर्शन की 'ए' श्रेणी की कलाकार हैं। देश एवं विदेश के लगभग सभी प्रतिष्ठित संगीत समारोह, सम्मेलनों, सेमीनारों एवं कार्यशालाओं में आपने भाग लिया है। आपको सात छात्रवृत्तियाँ एवं सीनियर फैलोशिप से नवाजा गया है। संगीत के छह पुस्तकों का लेखन व सम्पादन कार्य करने के अतिरिक्त 80 से अधिक आलेख राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय पुस्तकों में प्रकाशित हुए हैं। मेसेच्युसेट यूनिवर्सिटी व अमेरिकन बायोग्राफिकल सोसाइटी जैसे अंतर्राष्ट्रीय सम्मानों से विभूषित डॉ. मधु भट्ट तैलंग को अनेक महत्वपूर्ण पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। बी.बी.सी. द्वारा आपका नाम 100 राष्ट्रीय मोस्ट पावरफुल भारतीय महिलाओं की सूची में शामिल किया गया है।

यश देवले – गायन

ग्वालियर के सांगीतिक परिवार में जन्में युवा शास्त्रीय गायक यश संजय देवले ने संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता प्रसिद्ध संगीत गुरू संजय देवले से प्राप्त की। वर्तमान में स्व. पं. जितेन्द्र अभिषेकी के पट्ट शिष्य पं. सुधाकर देवले से संगीत का गहन प्रशिक्षण ले रहे हैं। आगरा घराने के वरिष्ठ संगीत गुरू डॉ. राजेश केलकर से भी संगीत सीखने का अवसर प्राप्त हुआ है। ग्वालियर घराने के पण्डित महेश दत्त पाण्डे तथा वरिष्ठ संगीतज्ञ डॉ. पी.एल. गोहदकर से भी ग्वालियर घराने की गायिकी का मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है। एम.एस. यूनिवर्सिटी बड़ौदा से स्नातकोत्तर डिग्री स्वर्ण पदक के साथ प्राप्त की है। अनेक राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान के साथ ही राष्ट्रीय युवा उत्सव कोल्हापुर में प्रथम स्थान प्राप्त यश संजय देवले देश के युवा गायकों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। भारत सरकार की राष्ट्रीय छात्रवृत्ति प्राप्त यश संजय देवले को अनेक सम्मानों से नवाजा जा चुका है व देश के प्रमुख सांगीतिक मंचों सेअपने गायन की सफल प्रस्तुति दे चुके हैं।

सुगातो भादुडी – मैन्डोलिन

युवा मैन्डोलिन वादकों में आप अग्रणी पंक्ति के कलाकार हैं। आप गायन-वादन दोनों में दक्ष हैं। बहुत ही कम उम्र में ही आपकी पश्चिमी वाद्य यंत्रों के प्रति लगन एवं रुचि जाग्रत हुई। शास्त्रीय संगीत की शिक्षा आपने सुप्रसिद्ध पण्डित तेजेन्द्र नारायण मजूमदार से प्राप्त की, उस्ताद अली अकबर खाँ द्वारा आयोजित संगीत कार्यशाला में आप प्रमुख संगीतज्ञ रहे। मैहर-सेनी घराना के युवा ध्वज वाहक सुगातो को सुर श्रृंगार संसद द्वारा सुरमणि, संगीत सम्राट उस्ताद अल्लादिया खान मेमोरियल, महाराष्ट्र द्वारा गंधर्व रत्न, महाऋषि फाउंडेशन, लंदन द्वारा महाऋषि पुरस्कार तथा यूरो फेस्टिवल, जर्मनी में बेस्ट मैन्डोलिन सोलोइस्ट अवार्ड से सम्मानित किया गया है। सुगातो गायिकी एवं तंत्रकारी दोनों विधाओं में दक्ष हैं। बीन, रवाब, सरोद, सितार आदि वाद्यों के रागदारी का समावेश आपके वादन में दिखाई पड़ता है। भारत की सभी महत्वपूर्ण संगीत सभाओं में आपको संगीत कला का प्रदर्शन करने का श्रेय प्राप्त है। यूरोप एवं दुनिया के कई देशों के संगीत मंचों पर मनमोहक प्रस्तुतियाँ दे चुके सुगातो ने अन्तर्राष्ट्रीय सिल्क रोड संगीत, उत्सव, अरमीनिया में उल्लेखनीय प्रस्तुति दी।

कावालम श्रीकुमार – गायन

श्रीकुमार ने मात्र पाँच वर्ष की अल्पायु से ही संगीत की शिक्षा श्री अम्बलपुर शिवशंकर पणिक्कर, त्रीशूर वैद्यनाथन, मावलिक्कर प्रभाकर वर्मा एवं अंबलापुरा तुलसी के मार्गदर्शन में आरम्भ की। कर्नाटक संगीत की शिक्षा गुरू श्री बी.शशिकुमार से प्राप्त की। आपकी कर्णप्रिय एवं स्पष्ट आवाज़ में गायी गयीं आदिगुरू की रचनाएँ जैसे ललिता एवं विष्णुसहस्त्रनाम, सौंदर्य लहरी इत्यादि अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। रामकथा शूकन, गानपूर्णाश्री, केरल संगीत नाटक अकादमी, संगीत रत्न एवं `एम.एस. सुब्बलक्ष्मी' जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित। श्रीकुमार ने अनेकों मलयाली फ़िल्मों के गीतों को मधुर आवाज़ दी। कर्नाटक संगीत पर आधारित अत्यन्त लोकप्रिय टेलीविज़न कार्यक्रम `रागोल्सवम्' का संचालन किया।

स्टीफन काय, यू.के. – पियानिस्ट (विश्व संगीत)

प्रतिभाशाली संगीतकार एवं पियानोवादक स्टीफन काय लंदन से सम्बन्ध रखते हैं। वर्ष 2006 में भारत में बसने के बाद से आपने कई बैंड्स की स्थापना की। आपने स्टिफ किटेन्स के पंद्रह संस्करणों में निर्माता, निर्देशक तथा कलाकार की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्टीफन ने `द मेडिसिन शो'' की अवधारणा की जिसमें 30 संगीतकारों, हास्य कलाकारों, अभिनेताओं एवं नृत्य कलाकारों ने अपनी कला का मनमोहक प्रदर्शन किया। `द मेडिसिन शो' का दिल्ली, गुड़गाँव, मुंबई, बेंगलुरु, पुणे और कोच्चि में मंचन किया गया। आपने लगातार तीन वर्षों तक (2010, 2011 और 2012) में सर्वश्रेष्ठ भारतीय कीबोर्ड प्लेयर श्रेणी में जैक डेनियल रॉक पुरस्कार जीता। वह ड्रम, गिटार और थेरेमिन में भी पारंगत है। हाल ही में वे अपने बैंड `द जैस बी स्टाईस' के साथ कई प्रमुख लेखकों, अभिनेताओं और कवियों की एक `वर्ड जैज़' नामक श्रृंखला की क्यूरेटिंग और प्रदर्शन कर रहे हैं। स्टीफन 1920 के दशक की मूक फिल्मों को संगीत भी दे रहे हैं, जिसे भारत के विभिन्न स्थानों और सिनेमाघरों में संगीत के साथ प्रदर्शित किया जा रहा है।

साधना देशमुख मोहिते – गायन

साधना देशमुख मोहिते का जन्म महाराष्ट्र के यवतमाल नगर के संगीतज्ञ परिवार में हुआ। संगीत की प्रारंभिक शिक्षा श्री व्ही.डी. पाण्डके के मार्गदर्शन में तथा गहन शिक्षा श्रीमती सुमनताई चौधरी से प्राप्त की। शास्त्रीय संगीत का उच्च शिक्षण एवं तालीम संगीत रिसर्च अकादमी, कोलकाता से पंडित उल्हास कशालकर से प्राप्त किया। वहीं रह कर जयपुर एवं ग्वालियर घराना की शिक्षा ग्रहण की तथा ग्वालियर घराना के मूर्धन्य गायक पंडित बालासाहेब पूंछवाले जी से भी ग्वालियर घराना की प्राचीन बन्दिशों व टप्पा का प्रशिक्षण प्राप्त किया। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के 'ए' श्रेणी की कलाकार साधना को भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा संगीत के उच्च अध्ययन के लिए छात्रवृत्ति से नवाजा गया। आकाशवाणी की अखिल भारतीय शास्त्रीय संगीत प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक से अलंकृत साधना के गायन में ग्वालियर तथा जयपुर घराने की विशेषताएँ समाहित हैं। आपको संस्कृति मंत्रालय द्वारा मॉस्को में आयोजित युवा उत्सव तथा देश के कई प्रतिष्ठित कला मंचों, उत्सवों में उच्च कोटि की प्रस्तुतियाँ देने का श्रेय प्राप्त है। एम.ए. (कंठ संगीत), अमरावती विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर स्वर्ण पदक अर्जित करने वाली उत्कृष्ट कलाकार साधना को जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर द्वारा शोध उपाधि भी प्रदान की गयी है।

प्रो. पण्डित साहित्य कुमार नाहर – सितार

पारम्परिक संगीतज्ञ परिवार 'मिश्रा घराना' में जन्में प्रो. साहित्य कुमार नाहर प्रसिद्ध सितार वादक हैं। आपने गायिकी, तबला वादन एवं उसके पश्चात सितार की प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता गुरु स्वर्गीय पंडित प्रह्लाद मिश्रा 'दसपिया' के सानिध्य में प्राप्त की। आपको पंडित आर. ए. झा 'राम रंग' से भी मार्गदर्शन प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। इसके पश्चात आपको मैहर घराना के सुप्रसिद्ध सितार वादक पद्मभूषण स्वर्गीय पंडित निखिल बैनर्जी के सानिध्य में सितार वादन शैली को विकसित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ऑल इंडिया रेडियो, दूरदर्शन के उच्च श्रेणी तथा आई.सी.सी.आर. के सूचीबद्ध कलाकार प्रो. साहित्य कुमार ने देश विदेश के अनेक कला उत्सवों एवं मंचों पर अपनी अद्भुत कला का जादू बिखेरा है तथा संगीत जगत में विशेष स्थान प्राप्त किया है। खैरागढ़ विश्वविद्यालय से संगीत में स्नातकोत्तर उपाधि तथा इलाहबाद विश्वविद्यालय से डी.फिल. एवं डी.लिट्. उपाधि से सम्मानित प्रो. साहित्य कुमार को 'सुरमणि' तथा कई और सम्मानों से सम्मानित किया गया है। वर्तमान में म्यूजिक एवं परफार्मिंग आर्ट्स विभाग, इलाहबाद विश्वविद्यालय में प्रोफेसर पद पर कार्यरत प्रो. साहित्य कुमार शास्त्रीय संगीत क्षेत्र में कई संस्थाओं में महत्वपूर्ण सेवाएँ देते आए हैं तथा शोध, अध्यापन, प्रकाशन एवं संगोष्ठियों में अपना उल्लेखनीय योगदान देते आ रहे हैं।

पण्डित राजन-साजन मिश्र - गायन

अपने ओजस्वी स्वर से बनारस घराने की संगीत परम्परा के गहन और प्रतिबद्ध निर्वाह से गरिमा और मान-प्रतिष्ठा अर्जित करने वाले विख्यात गायक बन्धु पण्डित राजन-साजन मिश्र समकालीन परिदृश्य में ऐसे कलाकार के रूप में विख्यात हैं। मिश्र बन्धु में बड़े, पण्डित राजन मिश्र का जन्म 1951 में तथा छोटे, पण्डित साजन मिश्र का जन्म 1956 में वाराणसी में हुआ। पण्डित राजन मिश्र ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर तथा पण्डित राजन मिश्र ने स्नातक उपाधि प्राप्त की। उनके पिता स्वर्गीय पण्डित हनुमान प्रसाद मिश्र सुप्रतिष्ठित सारंगी वादक थे। अपने पिता और चाचा स्वर्गीय गोपाल मिश्र से उन्होंने संगीत की बुनियादी शिक्षा प्राप्त की। बनारस घराने के निष्णात और गुणी गायक पण्डित बड़े रामदास जी से भी उन्होंने संगीत का सानिध्य प्राप्त किया और संस्कारों का अनुसरण किया। बनारस घराने के प्रतिनिधि गायक के रूप में पण्डित राजन-साजन मिश्र ने ख्याल शैली के साथ-साथ टप्पा, तराना गायन में भी दक्षता हासिल की। आलाप की गम्भीरता, तानों की तैयारी एवं सुमधुर आवाज मिश्र बन्धु के गायन की विशेषता है।

पण्डित राजन-साजन मिश्र को चार दशक से भी अधिक समय से निरन्तर सृजन-सक्रियता में राष्ट्रीय तानसेन सम्मान सहित अनेक मान-सम्मान और पुरस्कार मिले हैं। उन्होंने दुनिया के अनेक देशों की सांगीतिक यात्राएँ की हैं जिनमें अमेरिका, यूरोप, सिंगापुर, श्रीलंका, मिडिल ईस्ट, दोहा, कतर, दुबई प्रमुख हैं। संगीत की अनेक प्रतिष्ठित कम्पनियों ने उनके गायन के कैसेट्स और सीडीज जारी किये हैं।

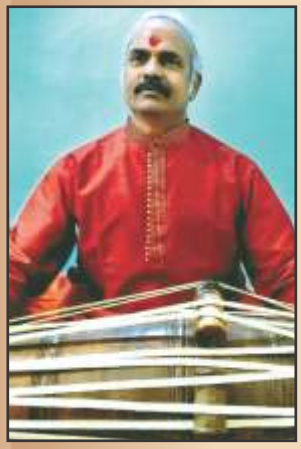

जगत नारायण शर्मा - पखावज

प्रतिभावान उत्कृष्ट पखावज वादक जगत नारायण शर्मा का जन्म ग्वालियर के संगीतज्ञ परिवार में हुआ। आपको संगीत की प्रेरणा अपने पिता स्वर्गीय पंडित छकी लाल जी शर्मा से प्राप्त हुई तथा आपने तबला वादन की शिक्षा उस्ताद नारायण प्रसाद जी रतोनिया के मार्गदर्शन में ग्वालियर में प्रारम्भ की। मृदंग (पखावज) की भक्तिमय ध्वनि से आकर्षित होकर आपने मृदंग वादन की शिक्षा प्राप्त करने का निर्णय लिया तथा स्वर्गीय डॉ. स्वामी रामशंकर दास पगलदास जी महाराज के सानिध्य में अयोध्या में प्राप्त करना आरम्भ की। जगत नारायण ने कई दिग्गज कलाकार जैसे- ध्रुपद गायक उस्ताद वासिफउद्दीन डागर, पंडित प्रेम कुमार मलिक, पंडित असित कुमार बेनर्जी (रुद्र वीणा), पंडित उदय कुमार मलिक, पंडित अभिजीत सुखदाणे तथा कई और कलाकारों के साथ पखावज पर संगत की है। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के 'बी' श्रेणी के कलाकार जगत नारायण शर्मा ने देश के कई कला मंचों पर एकल तथा युगल प्रदर्शन दिये तथा शास्त्रीय संगीत कला रसिकों से सराहना प्राप्त की।

हेमांग कोल्हटकर - गायन

हेमांग कोल्हटकर एक युवा प्रतिभाशाली हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायक है। आपका जन्म एक सुसंस्कृत परिवार में हुआ। मात्र पाँच वर्ष की छोटी आयु से आपने गायन की शिक्षा डॉ. स्मिता सहस्त्रबुद्धे जी के मार्गदर्शन में ग्रहण करना प्रारम्भ की। तत्पश्चात श्री संजय देवले जी एवं प्रो. रंजना टोणपे जी के मार्गदर्शन में भी आपको गायन कला की शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। हेमांग को वरिष्ठ गायक पंडित रामचन्द्र मराठे जी से भी गायन कला में मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। वर्तमान में आप ग्वालियर घराना के प्रख्यात गायक पंडित उमेश कम्पूवाले जी से गायन का गहन प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। भारतीय संगीत महाविद्यालय और शासकीय माधव संगीत महाविद्यालय से संगीत कला रत्न की उपाधि से सम्मानित हेमांग ने कई कला मंचों पर गायन कला का जादू बिखेरा है।

सोमबाला सातले कुमार - ध्रुपद गायन

ध्रुपद गायन की परम्परा में जिन शीर्ष नामों का उल्लेख किया जाता है उनमें मध्यप्रदेश के खंडवा में जन्मी श्रीमती सोमबाला कुमार भी एक हैं। श्रीमती कुमार ने संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा खंडवा में श्री एम.डी. राजे एवं श्री एम.के. कवाठेकर से ग्रहण की। डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय से शास्त्रीय संगीत में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त करने के बाद आपको उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत एवं कला अकादमी द्वारा ध्रुपद गायन प्रशिक्षण के लिये छात्रवृत्ति से सम्मानित किया गया। यहाँ उनको विश्व प्रसिद्ध ध्रुपद गुरु उस्ताद जिया फरीदउद्दीन डागर के मार्गदर्शन में ध्रुपद गायन शैली की जटिलताओं को आत्मसात करने का अवसर प्राप्त हुआ। आपको समय-समय पर विश्वविख्यात वीणा वादक गुरु स्वर्गीय उस्ताद जिया मोहिउद्दीन डागर से भी पथप्रदर्शन प्राप्त होता रहा। आपको भारत सरकार से भी तीन वर्ष के लिये छात्रवृत्ति मिली। देश के लगभग सभी प्रमुख संगीत सभाओं, मंचों पर अपनी संगीत कला का प्रदर्शन देती आ रही हैं। ध्रुपद के विभिन्न पक्षों पर उनके व्याख्यान होते रहे हैं तथा आप ध्रुपद एवं नाद योग पर कार्यशालाएँ आयोजित करती आ रही हैं। इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ द्वारा आपको छात्रों को ध्रुपद प्रशिक्षण एवं विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में भी आमंत्रित किया जाता रहा है। प्रसिद्ध नाट्य एवं कहानी लेखक श्री भीष्म साहनी द्वारा लिखित `कबीरा' नाट्य संगीत में आपको संगीत निर्देशन का अवसर प्राप्त हुआ।

हरिकथा एवं मीलाद शरीफ़, शहनाई वादन, परम्परा

तानसेन समारोह की सांगीतिक यात्रा नौ दशक पूरे कर शताब्दी के अंतिम दशक में प्रवेश कर चुकी है। समारोह से जुड़ी अनन्यतम गतिविधि के रूप में समारोह के शुभारम्भ दिवस पर प्रातः विख्यात संगीतकार तानसेन साहब की समाधि पर हरिकथा एवं मीलाद का आयोजन किया जाता है। यह वर्षों से तानसेन समारोह की महत्वपूर्ण गतिविधि रही है। परम्परानुसार हरिकथा ढोलीबुवा महाराज द्वारा एवं मीलाद शरीफ़ मौलाना साहब द्वारा एवं शहनाई वादन की परम्परा का निर्वहन किया जाता है।

वादी संवादी

वादी-संवादी तानसेन समारोह की नियमित गतिविधि के रूप में स्थापित है। पिछले वर्षों में संगीत की पारम्परिक सभाओं के साथ-साथ विमर्श का क्रम निरन्तरता में आयोजित किया जाता रहा है। संगीत समारोह की समग्रता में विमर्श एक अनूठी कड़ी है। इस अनुष्ठान में देश के संगीत मनीषी घराने की सांगीतिक विशिष्टताओं के साथ-साथ संगीत के विभिन्न पक्षों पर, स्वयं की संगीत साधना और अवदान से कला रसिकों को अभिभूत करते रहे हैं। यह प्रयास सफल रहा और पिछले तानसेन समारोहों में यह अनुषांगिक गतिविधि बहुत सराही भी गई है। हम आभारी हैं कि वादी-संवादी की इस महनीय यात्रा में संगीत मनीषी और सुधी रसिकजन निरन्तर सहभागी बने रहे हैं। इस वर्ष सुरबहार पर डॉ. अश्विन महेश दलवी-जयपुर का सोदाहरण व्याख्यान होगा।

डॉ. अश्विन महेश दलवी

राजस्थान ललित कला अकादमी के पूर्व अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध डॉ. अश्विन महेश दलवी उत्कृष्ट सुरबहार वादक हैं। आपको अपने परिवार से संगीत और कला के प्रति प्रेम विरासत में मिला और उन्होंने अपने नामवर पिता श्री महेश डी. दलवी के मार्गदर्शन में संगीत का प्रशिक्षण शुरू किया। वर्ष 2003 में आपने इटावा घराना के सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ एवं सितार वादक पंडित अरविंद पारिख के सानिध्य में सुरबहार का गहन प्रशिक्षण प्राप्त करना प्रारम्भ किया। तब से आप पंडित अरविंद पारिख के मार्गदर्शन में सुरबहार की बारीकियाँ जैसे सुरबहार पर ध्रुपद एवं ख्याल अंग, सिलसिलेवार बढ़त, पारम्परिक बन्दिशें इत्यादि आत्मसात कर रहे हैं। अश्विन ने तानसेन समारोह, छंदयन यू.एस.ए. सहित देश विदेश के कई प्रतिष्ठित कला मंचों पर अपनी कला का प्रदर्शन किया है तथा यश बटोरा है। आपको मूर्धन्य सितार वादक पंडित निखिल बैनर्जी पर शोध कार्य के लिए डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया है। अश्विन ने प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों जैसे कि बनस्थली विश्वविद्यालय एवं महाराजा सायाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा में संकाय सदस्य के रूप में भी योगदान दिया है। अश्विन पर्यटन और संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित छात्रवृत्ति कार्यक्रमों में पैनलिस्ट के रूप में भी अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। वह जवाहर कला केंद्र, जयपुर (राजस्थान सरकार), पश्चिम क्षेत्र संस्कृति केंद्र, उत्तर क्षेत्र संस्कृति केंद्र और उत्तर-मध्य क्षेत्र संस्कृति केंद्र (भारत सरकार) के बोर्ड सदस्य भी रहे हैं।

सोदाहरण व्याख्यान

28 दिसम्बर 2020

डॉ. अश्विन महेश दलवी-जयपुर

सुरबहार

अपराह्न 1.30

राजा मानसिंह तोमर संगीत कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर

तानसेन समारोह

विश्व संगीत समागम
2 0 2 0

प्रणति

2020 में अब तक हमसे बिछड़ी कला एवं
साहित्य की विभूतियों को

भावांजलि

छायाचित्र प्रदर्शनी

26 से 29 दिसम्बर 2020
तानसेन समारोह स्थल

तानसेन समारोह

विश्व संगीत समागम

2020

प्रवेश निः शुल्क
प्रवेश पत्र द्वारा
प्रथम आएं-प्रथम पाएं
कार्यक्रम परिवर्तनीय

लाइव @MP culture department @tansensamaroh
@tansensamaroh

कोरोना संक्रमण के लिए जारी दिशा-निर्देशों का पालन आवश्यक होगा
दो गज की दूरी मास्क है जरूरी।

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग के लिए जिला प्रशासन एवं नगर निगम ग्वालियर के सहयोग से
उस्ताद अलाउद्दीन ख़ाँ संगीत एवं कला अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, भोपाल का प्रतिष्ठा आयोजन

स्थानीय सम्पर्क
तानसेन कला वीथिका- पड़ाव, ग्वालियर
0751-2372398
kalaacademymp@gmail.com, uakska@yahoo.com